

₹ 25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कादम्बिनी

मई 2019

بسم الله الرحمن الرحيم

"ऐ लोगो
जो ईमान लाए हो,
तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर
दिये गये, जिस तरह तुम से पहले
नबियों के अनुयायियों के लिए
अनिवार्य किये गये
थे । इससे उम्मीद है कि तुममें
परहेज़गारी का गुण पैदा होगा ।"
(क़ुरआन, 2:183)

A Well Wishers

JIH, Ramganj Bazar, Jaipur (Raj.)

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 28 अंक 11 मई 2019

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें ईश-परायणता का गुण पैदा होगा । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–
संपादक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–
प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव
जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025
ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय
011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-
वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-
पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल
यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर
वेब : www.kanti.in

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुल्क की ख़ुशहाली के लिए दुआ

या रब तेरा करम हो मेहरबानियां रहें
मेरे हसीन मुल्क में अच्छाइयां रहें
इन्सानियत की ख़ुशबू से महके मेरा चमन
अम्न-ओ-अमान राहतें आसानियां रहें

छाई रहें गगन में यूं रहमत की घटाएं
चलती रहें हमेशा ही ख़ुशियों की हवाएं
फलती रहें इसी तरह खेतों में खेतियां
ख़ुशहाल और सरसब्ज़ रहें इसकी बस्तियां
माहौल ख़ुशनुमा हो फ़िज़ा ख़ुशगवार हो
हर सिम्त हंसती-खेलती फ़सले बहार हो
इसके हर एक ज़र्रे में रानाइयां रहें

हर वक़्त कामयाबी के परचम बुलंद हों
नाकामियों के वास्ते दरवाज़े बंद हों
मिट जाएं अंधेरे रहे हर सिम्त रौशनी
बेख़ौफ़ बेख़तर रहे इन्सां की ज़िन्दगी
मज़बूत हों इरादे रहें हौसले बुलंद
चारों तरफ़ विकास की उड़ती रहे सुगंध
हर शख़्स के मेयार में ऊंचाइयां रहें

हर शख़्स को आज़ादी से रहने का हक़ मिले
मज़लूम और ग़रीबों को जीने का हक़ मिले
दंगे-फ़साद नफ़रतें ख़ूरेज़ियां न हों
बरबादियों की ज़द में कहीं बस्तियां न हों
महफ़ूज़ रहें सरहदें दुश्मन की चाल से
मौला बचाके रखना इसे हर बबाल से
इससे हमेशा दूर परेशानियां रहें ।

● ज़हीर ललितपुरी



कहां क्या है ?

मुल्क की खुशहाली के लिए दुआ	–ज़हीर ललितपुरी	3
कुरआंन ज्योति		5
महिलाओं के बारे में वसीयत (हदीस मंजरी)		6
रमज़ान के रोज़े का उद्देश्य (संपादकीय)		7
हाले दिल यार को लिखूं क्योंकर... (आपके पत्र)		9
मनु और महानूह (विचारणीय)		11
अल्लाह पर ईमान (आस्था)	–जमालुद्दीन एम॰ जारोबोज़ो	13
ईश्वरीय धर्म इस्लाम	–मुहम्मद सद्रे आलम मिस्बाही	17
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) एक कुशल राजनीतिज्ञ (जीवन आदर्श)	–मुहम्मद मुरसलीन जामई	19
हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)	–अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा	21
रोज़ा ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करने का साधन (विशेष आयोजन)	–सलमान अब्दुस्समद	26-27
रमज़ान : मानव सेवा का महीना	–संपादन प्रभाग	29
रमज़ान के रोज़ों का मानव शरीर पर प्रभाव	–ऐमन ख़्वाजा	30
लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका	–मुशर्रफ़ अली	33
कितना परिपक्व हुआ हमारा लोकतंत्र	–जुनैद अली	35
क्या न्यूज़ीलैंड की घटना आतंकवाद नहीं ?	–अजय तिवारी	39
इस्लाम से नफ़रत करने वाले रिचर्ड बने मुसलमान	–संपादन प्रभाग	41
गर्मी में होने वाले रोगों से कैसे निबटें ?	–डॉ॰ विभा खरे	43
पर्दा : सर्वोत्तम सौंदर्य रक्षक (महिला जगत)		45
होना चाहिए खुश, सड़क छाप (कविताएं)	–देवेन्द्र कुमार मिश्रा	47
शेर और किशमिश (बालवीथी)		49

कुरआन ज्योति

(94) अब अगर तुझे उस मार्गदर्शन की ओर से कुछ भी सन्देह हो, जो हमने तुझ पर उतारा है, तो उन लोगों से पूछ ले जो पहले से किताब पढ़ रहे हैं। वास्तव में यह तेरे पास सत्य ही आया है तेरे रब की ओर से, इसलिए तू सन्देह करने वालों में से न हो (95) और उन लोगों में न शामिल हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वरना तू हानि उठाने वालों में से होगा।[96]

(96,97) सच तो यह है कि जिन लोगों पर तेरे रब का वचन सिद्ध हो गया है[97], उनके सामने चाहे जो निशानी आ जाए, वे कभी ईमान लाकर नहीं देते जब तक कि दर्दनाक अज़ाब सामने आता न देख लें। (98) फिर क्या ऐसा कोई उदाहरण है कि एक बस्ती अज़ाब देखकर ईमान लायी हो और उसका ईमान उसके लिए लाभप्रद सिद्ध हुआ हो? यूनुस की क़ौम के सिवा[98] (इसकी कोई उपमा नहीं), वह क़ौम जब ईमान ले आयी थी तो अलबत्ता हमने उस पर से दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई का अज़ाब टाल दिया था[99] और उसको एक समय तक ज़िन्दगी से लाभान्वित होने का अवसर दे दिया था।[100]

–क़ुरआन, 10:94-98

---

96. यह संबोधन ज़ाहिर में नबी (सल्ल०) से है, मगर वास्तव में बात उन लोगों को सुनानी अभिष्ट है जो आपके सन्देश में सन्देह कर रहे थे, और किताब वालों का हवाला इसलिए दिया गया है कि अरब के आम लोग तो आसमानी किताबों के ज्ञान से अनभिज्ञ थे, उनके लिए यह आवाज़ एक नयी आवाज़ थी, मगर किताब वालों (अह्ले किताब) के उलमा में से जो लोग दीनदार (धार्मिक) और न्यायप्रिय थे, वे इस बात की पुष्टि कर सकते थे कि जिस चीज़ की ओर क़ुरआन बुला रहा है, यह वही चीज़ है जिसकी ओर तमाम पिछले नबी बुलाते रहे हैं।

97. अर्थात यह वचन कि जो लोग स्वयं सत्य के तलबगार नहीं होते और जो अपने दिलों पर दुराग्रह, हठ और हठधर्मी के ताले चढ़ाए रखते हैं, और जो दुनिया की मोह में मस्त और अंजाम से निश्चिन्त होते हैं, उन्हें ईमान का सौभाग्य प्राप्त नहीं होता।

98. यूनुस अलैहिस्सलाम (जिनका नाम बाइबल में यूनाह है और जिनका समय 860-784 ई०पू० के बीच बताया जाता है) यद्यपि इसराईली नबी थे, मगर उनको अशूर (असीरिया) वालों के मार्गदर्शन के लिए इराक़ भेजा गया था और इसी आधार पर अशरियों को यहां 'यूनुस की क़ौम' कहा गया है। इस क़ौम का केन्द्र उस समय में नैनवा का प्रसिद्ध नगर था जिसके फैले हुए खंडहर आज तक दजला नदी के पूर्वी किनारे पर वर्तमान नगर मूसल के ठीक सामने पाये जाते हैं और इसी क्षेत्र में 'यूनुस नबी' के नाम से एक स्थान भी मौजूद है। इस क़ौम के उत्थान का अनुमान इनसे हो सकता है कि इसकी राजधानी नैनवा लगभग साठ मील की दूरी में फैला हुआ था।

99. क़ुरआन में इस क़िस्से की ओर तीन जगह केवल संकेत किये गये हैं, कोई विस्तृत विवरण नहीं दिया गया (देखिये सूरा-21 अंबिया, आयत 87-88, सूरा-37 अस्साफ़्फ़ात, आयत 139-148, सूरा-68, अल-क़लम,

(शेष पृष्ठ 10 पर)

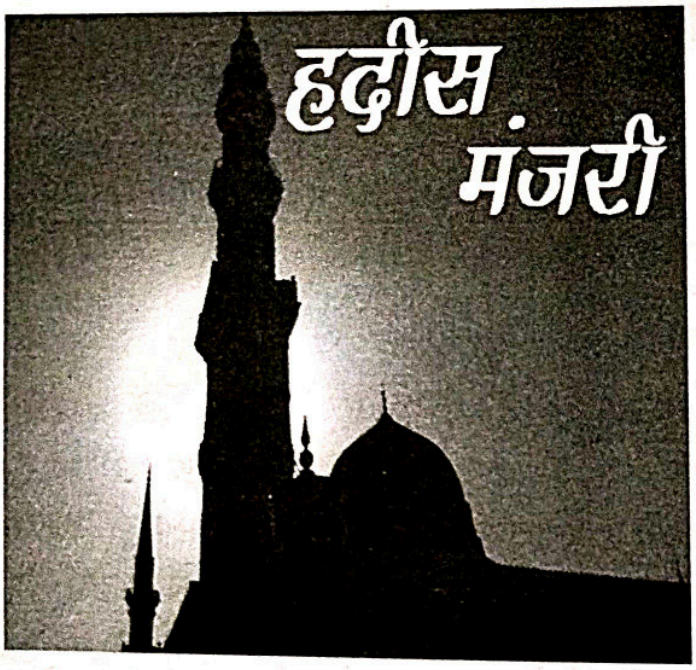

महिलाओं के विषय में वसीयत

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि स्त्री पसली से पैदा की गयी है । और पसली का सबसे टेढ़ा भाग उसका ऊपरी भाग होता है । अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे, तो उसे तोड़कर रख दोगे और अगर उसे छोड़ दोगे तो वह बराबर टेढ़ी ही रहेगी । अतः औरतों के साथ अच्छा व्यवहार किया करो ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अम्र बिन अल-अहवस अल-जोसमी (रज़ि॰) से रिवायत है कि उन्होंने 'हज्जतुलविदा' (आप सल्ल॰ के अन्तिम हज) के अवसर पर नबी (सल्ल॰) को सुना । आपने अल्लाह तआला की स्तुति और तारीफ़ की और नसीहत की । इसके बाद आपने कहा : "सावधान ! स्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो क्योंकि वे तुम्हारे पास क़ैद हैं । (स्त्री-संभोग) के सिवा तुम उनके किसी चीज़ के मालिक नहीं हो, किन्तु यह कि वे स्पष्ट अशोभनीय कर्म करें । और अगर वे ऐसा करें, तो उन्हें अपने बिस्तरों में तन्हा छोड़ दो और उन्हें मारो, ऐसी मार जो बहुत कष्टदायक न हो । फिर अगर वे तुम्हारी बात मान लें तो उनके विरुद्ध कोई राह न ढूंढो । जान लो कि तुम्हारी स्त्रियों पर तुम्हारा हक़ है और तुम पर स्त्रियों का हक़ भी है । तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वे तुम्हारे बिस्तर पर किसी ऐसे व्यक्ति को न बिठाएं जिसे तुम पसन्द नहीं करते और न तुम्हारे घरों में किसी ऐसे व्यक्ति को आने की अनुमति दें जिसे तुम नापसन्द करते हो । जान लो कि तुम पर उनका यह हक़ भी है कि तुम उनके कपड़े और खाने के मामले में उनके साथ अच्छी रीति अपनाओ ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत मुआविया बिन हैदह (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, हममें से किसी की स्त्री का उस पर क्या हक़ है ? आपने कहा : "यह कि जब तुम खाओ, तो उसे भी खिलाओ और जब तुम कपड़े पहनो, तो उसे भी पहनाओ और उसके मुंह पर न मारो और न उससे यह कहो कि अल्लाह तुझे अच्छाई से वंचित रखे और न उसे अलग करो किन्तु इस तरह कि वह घर ही में रहे ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह है जो उनमें अख़्लाक़ की दुष्टि से सबसे अच्छा हो । और तुममें सबसे अच्छा वह है जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छा हो ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दुनिया एक सुख-सामग्री है और उसकी बेहतरीन सुख-सामग्री नेक स्त्री है ।" –मुस्लिम

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

रमज़ान के रोज़े का उद्देश्य

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जो आदिकाल से ही ईश्वर का सामीप्य और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने का माध्यम रहा है । दुनिया की कोई भी क़ौम हो, चाहे वह दुनिया के किसी भी हिस्से में रहती हो, ईश्वर की उपासना के लिए उनके यहां किसी न केसी रूप में व्रत की परंपरा अवश्य पायी जाती है । भूख और प्यास जैसी अपनी आधारभूत आवश्यकताओं को त्यागकर मनुष्य स्वयं को स्वाभाविक रूप से अपने स्रष्टा के बहुत पास अनुभव करने लगता है । इच्छाओं को त्यागने से उपासक और उपास्य के बीच संपर्क सूत्र बहुत मज़बूत हो जाता है । रोज़ा रखने वाले के लिए अनिवार्य है कि उसके कर्म या कथन से किसी भी मनुष्य बल्कि किसी भी जीव को कोई हानि न पहुंचे । जब बंदा रोज़े की यह शर्त पूरी करता है तो उसके और उसके पालनहार के बीच की रुकावटें दूर हो जाती हैं । यही कारण है कि पूर्व से लेकर पश्चिम तक सभी सभ्यताओं और सभी धर्मों में व्रत की अवधारणा किसी न किसी रूप में मौजूद है । हमारे देश का सनातन धर्म हो, यहूदियत हो या ईसाइयत, सभी में व्रत के लिए दिन निर्धारित हैं । प्राचीन मिस्री, यूनानी, रोमन और चीनी आदि सभ्यताओं में भी किसी न किसी रूप में व्रत की उपस्थिति है ।

ईश्वर ने जब मनुष्य को दुनिया में भेजा तो उसके मार्गदर्शन के लिए अपने दूत भी खड़े किये, जो लोगों को बताते थे कि उन्हें दुनिया में कैसे जीवन गुज़ारना है, ईश्वर उनसे क्या चाहता है, उन्हें ईश्वर ने क्या करने का आदेश दिया है और क्या करने से रोका है । वे दूत लोगों को ईश्वर की उपासना के तरीक़े भी बताते थे, जो ईश्वर द्वारा निर्धारित किये गये थे । ईश्वर अपने अंतिम ग्रंथ क़ुरआन में कहता है कि उसने दुनिया के हर क्षेत्र में, हर भाषा में और हर क़ौम में अपने दूत खड़े किये । सभी दूतों ने अपने-अपने समय में अपनी-अपनी क़ौम को अपनी-अपनी भाषा में दुनिया में जीवन गुज़ारने के और ईश्वर की उपासना के तरीक़े बताए, जिनमें व्रत या रोज़े कॉमन हैं । कालांतर में इनका रूप विक्षिप्त हो गया, लेकिन ये आज भी हर धर्म और हर सभ्यता में मौजूद अवश्य हैं । इसी को याद दिलाते हुए क़ुरआन में अल्लाह कहता है–"तुम पर रोज़े अनिवार्य किये गये जिस तरह उन लोगों पर अनिवार्य किये गये थे जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ।" (क़ुरआन, 2:183) जब क़ुरआन का यह आदेश नाज़िल हुआ तो किसी ने यह नहीं पूछा कि 'सौम' अर्थात व्रत क्या है । सभी इससे भली-भांति परिचित थे । यहां तक कि क़ुरआन के आदेशों का मज़ाक़ उड़ाने वाले विरोधियों ने भी 'सौम' पर कोई आपत्ति नहीं जतायी ।

रोज़े की अनिवार्यता बताने वाली आयत में आगे है–"ताकि तुममें तक़वा (ईशपरायणता) का गुण पैदा हो ।" अर्थात भूखा-प्यासा रहना और अपनी इच्छाओं का परित्याग वास्तविक लक्ष्य नहीं है । यह तो रोज़े का बाहरी रूप है और वास्तविक उद्देश्य है ईशपरायणता की प्राप्ति । भूखा-प्यासा रहना कोई उपासना नहीं है, बल्कि उपासना का माध्यम है । इससे अपेक्षित यह है कि बंदा ईश्वर की मर्ज़ी के आगे अपने आपको पूरी तरह डाल दे और अपना पूरा जीवन उसके आदेशों के अनुसार गुज़ारे । वह हर समय आत्म-परीक्षण करता रहे कि उससे कहीं पर ईश्वरीय आदेशों का उल्लंघन तो नहीं हो रहा है । इसलिए रोज़े की हालत में बंदे को भलाई के कामों

में आगे रहना चाहिए । उसके अन्दर दूसरे मनुष्य के प्रति सहानुभूति की भावना पूरी प्रबलता के साथ उत्पन्न होनी चाहिए । भूख और प्यास की तकलीफ़ से गुज़र कर उसे ग़रीबों और वंचितों के दुख-दर्द का अनुभव होना चाहिए और उनकी हर संभव सहायता के लिए उसे आगे आना चाहिए । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) रमज़ान में अन्य दिनों की तुलना में अधिक दयालु और सबकी मदद करने वाले बन जाते थे । रमज़ान में आपके द्वार से कोई मांगने वाला ख़ाली हाथ नहीं लौटता था और उस ज़माने में कोई क़ैदी भी क़ैद नहीं रहता था । क़ुरआन में आगे कहा गया है कि, "रमज़ान वह महीना है जिसमें क़ुरआन उतारा गया, जो समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शन है ।" (2: 185) अल्लाह के द्वारा दिये गये इस महान मार्गदर्शन का शुक्र हम रोज़ा रखकर अदा करते हैं । क़ुरआन को पढ़ने, समझने और इसके आदेशों के अनुसार जीवन बिताने की कोशिश करते हैं । क़ुरआन चूंकि समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शन है, इसलिए जिन लोगों को यह प्राप्त हो चुका है उनका दायित्व है कि वे इसे उन लोगों तक पहुंचाएं, जो अभी तक इससे दूर हैं । क़ुरआन की शिक्षा को अपने जीवन में आत्मसात करना और उसे दूसरों तक पहुंचाना भी रोज़े का उद्देश्य है । रोज़े का एक उद्देश्य धैर्य का गुण पैदा करना भी है । इस संसार में ईश्वर के आदेशों के अनुसार जीवन बिताना कोई आसान काम नहीं है । इस रास्ते पर बड़ी परेशानियों और मुसीबतों का सामना करना पड़ता है । रोज़े की हालत में भूख और प्यास सहन करके आदमी ईश्वर के मार्ग में आगे आने वाली परेशानियों और कठिनाइयों को सहन करने, उस पर धैर्य करने और सन्मार्ग पर जमे रहने का साहस पाता है ।



हाले दिल यार को लिखूं क्योंकर हाथ दिल से जुदा नहीं होता

पुलवामा के घोर विनाशकारी संकट पर जी में आता है कुछ लिखूं लेकिन कैसे लिखूं न आंसू थम रहे हैं न हाथ में क़लम ढंग से पकड़ा जा रहा है । बार-बार यह विचार सामने आ रहा है–इतने दिनों के बाद हम छुट्टी पर जा रहे हैं बस यह यात्रा जल्द पूरी हो जाए । उतर के घर के दरवाज़े पर पहुंच जाऊं, मां से लिपट जाऊं, पिताजी के पांव छूं, बहनों-भाइयों को सीने से लगाऊं सब मेरी बाट देख रहे होंगे । मां तो एक-एक घड़ी गिन रही होगी, घर जाकर सबके अरमान पूरे करूंगा । जीभर के उनके पास बैठूंगा बोलो तुम्हें क्या-क्या चाहिए चलो अभी मेरे साथ बाज़ार तुम्हारी सारी इच्छाएं पूरी करूंगा । अपने हमजोलियों से बताऊंगा यहां के आराम, दुख-सुख सब बताऊंगा, पहाड़ों पर बर्फीली हवाओं, तेज़ आंधियों में अपनी सरहद की और अपने देश की सेवा में क्या आनन्द है । बर्फीली हवाओं की सरसराहट में कैसी सुरीली आनन्ददायक आवाज़ भरी है जो हमारे ख़ून को हर समय गरमाती रहती है ।

अबकी बार तो सब ही से जाकर मिलूंगा । अपने मुहल्ले, गांव, दूर-क़रीब के मिलने-जुलने वालों सबको एक साथ बिठाकर यह बताने की कोशिश करूंगा, प्रेम, मुहब्बत, भाईचारा, एक-दूसरे का आदर-सम्मान कैसा आनन्ददायक होता है ।

हर जवान लगभग इसी तरह के ताने-बाने बुनता हुआ चल रहा था और ड्राइवर बस को पूरी होशियारी से रास्ते के हर मोड़ से समझौता करता हुआ ले जा रहा था । वह भी अपनी जगह बहुत ख़ुश था छुट्टी तो उसे भी मिली थी । घर और बाल-बच्चों का ध्यान उसे भी गुदगुदा रहा था । लेकिन पूरी मानवता का क़ातिल–जिसकी आंखों में ख़ून उतर चुका था ने पूरी ताक़त से बारूद भरी गाड़ी को हमारे जवानों के क़ाफ़िले से जा टकराया । फिर क्या था–ज़बरदस्त धमाका हुआ, चारों ओर ख़ून ही ख़ून । जानें, खोल की तरह बिखर गयीं । गाड़ियों के परखच्चे उड़ गये, गाड़ी हो कि जवान किसी का कोई अंग साबुत नहीं था । मौत ने किसी को सिसकी भरने का भी समय नहीं दिया । इन्सानियत लहूलुहान हो गयी । ज़ुल्म और कायरता ने अपना नंगा नाच दिखा दिया । दम के दम में सारा देश शोक में डूब गया । मौत ने हमारे 49 जवानों को क्षण भर में निगल लिया ।

क़ज़ा ने मेरे कलेजे में हाथ डाला है,
जिगर को चीर लख़्ते जिगर निकाला है।

आंखों के सामने एकदम अंधेरा छा गया । बूढ़े मां-बाप सकते में पड़ गये । बच्चों के सर से बाप का साया उठ गया । भाई का बाज़ू टूट गया । ज़ालिम ने हमारे सारे देश में दुख बिखेर दिया । कैसा था वह ज़ालिम, अत्याचारी जिसने यह षड्यंत्र रचा, तनिक भी एहसास नहीं हुआ । नतीजा क्या होगा, यह ज़ुल्म कहां तक फैलेगा । जब फैलेगा तुम्हें ही नहीं तुम्हारे जैसे हज़ारों को ले जाएगा । तुम ने यह चिराग़ गुल करके अच्छा नहीं किया । आज हर देशवासी हर इन्सानियत दोस्त की आंखों में आंसू हैं, यह हरकत तो शायद कोई पागल भी न कर सके, बेरहम से बेरहम इन्सान भी नहीं कर सकता । इस ज़ालिम ने इन्सानियत की सारी ही सीमाएं तोड़ डालीं । क्या इस प्रकार कोई मसला हल हो जाएगा । क्या बात को कहने का यही तरीक़ा है । क्या इस ज़ालिम को समझाने वाला कोई था ही नहीं । क्या उसके मां-बाप बिल्कुल मर गये थे । क्या उसको ख़ुद अपनी जवानी पर भी तरस नहीं आया ।

आग से आग नहीं बुझती, आग तो पानी ही से बुझती

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

है । इस खेल में वह सब मुजरिम हैं जो प्रचंड़ता, अत्याचार की ''दहशतगर्दी'' की भावना रखते हैं । दहशतगर्दी अब एक भयानक रोग, एक कैंसर बन चुका है । इसकी जड़ें दूर-दूर तक फैल गयी हैं । इसके फ़ौरी इलाज की ज़रूरत है । हमारा समाज, हमारा देश अम्नपसन्द है, अम्न और शांति ही में सुख और तरक़्क़ी है । नफ़रत, घृणा, उपेक्षा से सिवाय बरबादी के और कुछ मिलने वाला नहीं है । दहशतगर्दी स्वयं बड़ा जुल्म है और इसका इन्सानियत किसी धर्म, मज़हब से कोई ताल्लुक़ नहीं । दहशतगर्दी के लिए न कोई माफ़ी है, न समझौता जो उसके प्रति ख़ामोश है वह भी उसमें ही शामिल है ।

हथियारों और अदअम्नी के सौदागर ख़ूब समझते हैं अगर अम्न-शांति पैदा हो गयी तो हमारी चौदराहट का क्या होगा । ऐसी सूरत में अपने अच्छे-बुरे को हमें ख़ुद ही समझना होगा । ऐसे में मां-बाप का कर्तव्य और बढ़ जाता है जो नवजवान तरक़्क़ी और इज़्ज़त की राह पर चलने के लिए तालीम, आदर, सम्मान, शांति, प्रेम, धैर्य के अतिरिक्त कोई और रास्ता अपनाता है वह सरासर धोके में है । ज़ेहनी बीमार है । वह अपने समाज, अपने देश बल्कि ख़ुद अपना दुश्मन है । हम दोनों देशों की ख़ुशहाली का अनुमान नहीं लगा सकते जब यह एक जान बन जाएं, अगर दीवारे-बर्लिन दो विश्व युद्ध झेलने के बाद गिरायी जा सकती है तो क्या यहां अम्न का माहौल पैदा नहीं किया जा सकता । एक बार फिर अपने उन जवानों को सलाम जिन्होंने अपनी ज़िन्दगियां देश पर निछावर कर दीं । उन माओं को सलाम, बहनों को सलाम जिन्होंने देश की ख़ातिर इस तमाम सदमे को सीने से लगा लिया ।

उन नन्हे-मुन्ने बच्चों को सलाम जो अपने पिता की बाट देख रहे थे, जिनकी माएं रातों को लोरियां सुना-सुना कर सुलाती थी, ''तेरे पिता जी आएंगे खेल-खिलौने लाएंगे, सोजा मेरे लाल सोजा ।'' पुलवामा की उस धरती को सलाम जिसकी मांग में मेरे शहीदों ने अपना ख़ून भर दिया । पुलवामा की उन हवाओं को सलाम जिन्होंने मेरे शहीदों को झुक-झुक छुवा, पुलवामा पर चमकने वाली सूरज की उन किरणों को सलाम जो पुलवामा की धर्ती पर सुबह ही चमक कर उसको बोसा देती है ।

डॉ० मुहम्मद दाऊद
नगीना, बिजनौर (उ०प्र०)

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

आयत 48-50)। इसलिए विश्वास के साथ नहीं कहा जा सकता कि यह क़ौम किन प्रमुख कारणों के आधार पर अल्लाह के इस नियम से मुक्त रखी गयी कि अज़ाब का निर्णय हो जाने के बाद किसी का ईमान उसके लिए लाभप्रद नहीं होता । फिर भी क़ुरआन के संकेत और यूनुस के सहीफ़ा (ग्रंथ) के विस्तृत विवेचनों पर विचार करने से वही बात सही मालूम होती है जो क़ुरआन के टीकाकारों ने वर्णन किया है कि हज़रत यूनुस (अलैहि०) चूंकि अज़ाब की सूचना देने के बाद अल्लाह की इजाज़त के बिना अपनी जगह छोड़कर चले गये थे, इसलिए जब अज़ाब की निशानियां देखकर आशूरियों ने तौबा व इस्तिग़फ़ार की तो अल्लाह ने उन्हें क्षमा कर दिया । क़ुरआन मजीद में अल्लाह के विधान के जो नियम वर्णन किये गये हैं, उनमें से एक स्थायी धारा यह भी है कि अल्लाह किसी क़ौम को उस समय तक अज़ाब नहीं देता जब तक उस पर अपनी युक्ति पूरी नहीं कर लेता । अत: जब नबी ने उस क़ौम की मोहलत के अन्तिम क्षणों तक रसूल होने की ज़िम्मेदारी पूरी न की और अल्लाह के निर्धारित समय से पहले स्वयं ही अपनी जगह से हट गया, तो अल्लाह के न्याय ने उसकी क़ौम को अज़ाब देना गवारा न किया, क्योंकि युक्ति पूरी करने की क़ानूनी शर्तें पूरी न हुई थीं । (व्याख्या के लिए देखिये सूरा-37 अस्साफ़्फ़ात की टिप्पणी 85)

100. जब यह क़ौम ईमान ले आयी तो उसकी उम्र की मोहलत बढ़ा दी गयी । बाद में उसने फिर विचार व व्यवहार की गुमराहियां अपनानी शुरू कर दीं । नाहूम नबी (720-698 ई०पू०) ने उसे सचेत किया, परन्तु कोई प्रभाव न पड़ा । फिर सफ़नियाह नबी (640-609 ई०पू०) ने उसको अन्तिम चेतावनी दी । वह भी कारगर न हुई । अंतत: सन 612 ई०पू० के लगभग समय में अल्लाह ने मीडिया वालों को उस पर मुसल्लत कर दिया । उन्होंने पूरा शहर जलाकर राख कर दिया । अशूर का बादशाह स्वयं अपने महल में आग लगाकर जल मरा और उसके साथ ही अशूरी राज्य और सभ्यता भी सदा के लिए समाप्त हो गयी । वर्तमान युग में पुरातत्वों की जो खुदाइयां इस क्षेत्र में हुई हैं उसमें आग लगने के निशान अधिकता से पाये जाते हैं ।

मनु और महानूह

हिन्दू सनातन धर्म के अनुसार पूरी मानवजाति मनु की संतान है । हिन्दू धर्म ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जब पूरी दुनिया जल प्रलय में समाप्त हो गयी तब मनु आये और उनकी संतान से दुनिया पुन: बस गयी । लेकिन मनु कौन थे ? उनसे पहले क्या था ? इस बारे में हिन्दू धर्म ग्रंथ कोई जानकारी नहीं देते, जबकि ये प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हैं ।

कुरआन हमें मनु के बारे में विस्तार से बताता है । मनु भी संसार के पहले मनुष्य और ईश्वर के पहले दूत आदम (अलैहि॰) की संतान में से थे, जो कई पीढ़ियों बाद पैदा हुए थे । वे स्वयं भी ईश्वर के एक दूत थे । आदम (अलैहि॰) और उनके बाद आने वाले नबियों की शिक्षाएं जब अपने मूल रूप में नहीं रह गयीं, कुछ लोगों की धृष्टता और कुछ लोगों की अज्ञानता के कारण जब उन शिक्षाओं में मिलावट हो गयी और लोगों को मार्गदर्शन मिलना बन्द हो गया तो ईश्वर ने मनु को धरती पर अपना दूत चुन लिया । मनु का अस्ल नाम नूह है, जिनको आदर और सम्मान से महानूह कहा गया । कालांतर में महानूह मनु बन गया ।

कुरआन विस्तार से बताता है कि जब ईश्वर ने मनु को अपना दूत चुना तो वे लोगों को ईश्वर की ओर बुलाने लगे । मनु ने लम्बे समय तक लोगों को एकेश्वरवाद की शिक्षा दी, मगर समाज में बुराई अपनी ऐसी पैठ बना चुकी थी कि बहुत थोड़े लोगों ने उनकी बातें मानीं । बाक़ी लोग उनके विरोधी हो गये और उन्हें तरह-तरह से परेशान करने लगे । अत: लोगों पर ईश्वर का प्रकोप उतरा, सारा संसार जलमग्न हो गया, केवल महानूह और उनके अनुयायी ही जीवित बच गये, जो बहुत थोड़े थे । बाद में इन्हीं की संतान से दुनिया पुन: आबाद हुई । (केवल नूह की संतान, अन्य किसी की संतान नहीं हुई) हम सब उन्हीं के वंशज हैं । नूह के बाद भी ईश्वर के दूत आते रहे और मानवजाति को उसका भूला सबक़ याद दिलाते रहे ।

केवल यह मान लेना हमारे लिए पर्याप्त नहीं है कि हम मनु की संतान हैं, बल्कि हमारी सफलता इसमें है कि हम मनु या महानूह की शिक्षाओं का पालन करें । मनु की सारी बुनियादी शिक्षाओं का आधुनिक संस्करण क़ुरआन है । समय के साथ-साथ उसमें आ चुकी मिलावटों को ईश्वर ने अपनी कृपा से दूर कर दिया और मूल शिक्षाओं को कुरआन में सुरक्षित कर दिया है ।

सम्मान और अपमान

इस बात से तो किसी को इन्कार नहीं है कि समस्त जगत की रचना एक ईश्वर ने की है । उसी ने धरती, आकाश और जो कुछ इनके बीच में है, पैदा किया । उसी ईश्वर या अल्लाह ने, जिसे विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से जाना जाता है, मिट्टी से आदम और हव्वा (या इवा) को बनाया । संसार में आदिकाल से अब तक जितने लोग हुए हैं वे सब उसी आदम और इवा की संतान हैं । यह एक ऐसा सत्य है, जिससे सभी सहमत हैं । इस आधार पर संसार में जितने व्यक्ति हैं सभी समान हैं और आपस में भाई-भाई हैं, चाहे भौगोलिक कारणों से उनकी शारीरिक रचना में कुछ भी अन्तर हो और चाहे वे कोई भी भाषा बोलते हों ।

अत: समाज को विभिन्न वर्गों में विभाजित करना ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध है । ईश्वर ने तो सबको एक जैसा पैदा किया है, उसकी दृष्टि में सारे मनुष्य समान हैं । उसके यहां रंग, वंश, जाति, क्षेत्र, भाषा आदि किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं है । ईश्वर के यहां कर्म ही वह मानदंड है जिसके आधार पर मनुष्य-मनुष्य में अन्तर हो सकता है । जिसके कर्म अच्छे होंगे, जिसने ईश्वरीय आदेशों का पालन किया होगा, ईशदूतों द्वारा लायी गयी जीवन व्यवस्था को अपनाया होगा वह ईश्वर के यहां सम्माननीय होगा, प्रतिष्ठित होगा । यह अन्तर भी ईश्वर के यहां है, इस संसार में मनुष्य होने के नाते वह भी दूसरे लोगों के समान ही होगा ।

इसके विपरीत जिसके कर्म अच्छे नहीं होंगे, जिसने ईश्वरीय आदेशों की परवाह नहीं की होगी, जिसने ईशदूतों द्वारा लायी गयी जीवन व्यवस्था को झुठलाया होगा वह ईश्वर के यहां अपमानित होगा, दंड का भागी होगा । झुठलाने का अर्थ केवल यह नहीं है कि आदमी उसे मानने से इन्कार कर दे और उसे ग़लत ठहराए बल्कि अगर वह मुंह से तो उसे अच्छा कहता रहे और उसे स्वीकार करने का दावेदार भी हो, मगर उसका आचरण उसके अनुकूल न हो तो ऐसा आदमी भी झुठलाने वालों की श्रेणी में आएगा और उसका अंत भी बहुत बुरा होगा । **● संपादन प्रभाग**

रमज़ान के तुहफे

तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग-1	तलख़ीस: मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	800.00
तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग-2	तलख़ीस: मौलाना सदरुद्दीन इस्लाही	520.00
अनूदित क़ुरआन मजीद 23 X 36 / 16	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	380.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-1	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	450.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-2	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	500.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-3	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	580.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-4	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	585.00
ईदुल-फ़ित्र किसके लिए?	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	14.00
ख़ुतबात-३ (नमाज़, रोज़ा की हक़ीक़त)	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	32.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	10.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	ख़ुर्रम मुराद	25.00

Towards Understanding the Qur'an

Surahs1-3 Vol.I [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	210.00
Surahs 4-6 Vol.II [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	175.00
Surahs 7-9 Vol.III [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	210.00
Surahs 10-16 Vol.IV [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	215.00
Surahs 17-21 Vol.V [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	200.00
Surahs 22-24 Vol.VI [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	200.00
Surahs 25-28 Vol.VII [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	160.00
Surahs 29-32 Vol.VIII [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	190.00
Surahs 33-37 Vol.IX [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	220.00
Surahs 38-46 Vol.X [HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	300.00
Vol XIII	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	225.00
Surahs 78-114 Part-30(Juz'Amma)	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	240.00
Towards Understanding the Qur'an 23x36/16[HB]	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	600.00
Fundamentals of Islam Part -III	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	34.00
Worship and Festivals in Islam	मौलाना सैयद अबुल आला मौदूदी	38.00
The Institution of Fasting	मुहम्मद मज़हर हुसैनी	36.00

Customer Care No : 7290092403 E-mail: info@mmipublishers.net :आर्डर के लिये राबता करें

MMI PUBLISHERS

D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail:info@mmipublishers.net,mmipublishers@gmail.com
Website: www.mmipublishers.net

अल्लाह पर ईमान

■ जमालुद्दीन एम॰ ज़ाराबोज़ो

इस्लाम में ईमान (आस्था) का जो विभाग है इसमें ईमान बिल्लाह (अल्लाह पर ईमान) हर चीज़ की जड़ और बुनियाद है । आस्था और विश्वास का केंद्र बिन्दु 'ईमान बिल्लाह' (अल्लाह पर ईमान) है । अच्छे कर्म का आधार भी यही है, यही कारण है कि इस्लाम में ईमान बिल्लाह पर सबसे अधिक बल दिया गया है और इसको खोलकर बयान किया गया है । एक प्रसिद्ध मुसलमान विद्वान इब्ने अबी अल-इज़्ज़ अल-हनफ़ी का तो यहां तक कहना है कि पूरा कुरआन ईमान बिल्लाह की व्याख्या पर आधारित है । इसकी व्याख्या करते हुए वे कहते हैं–

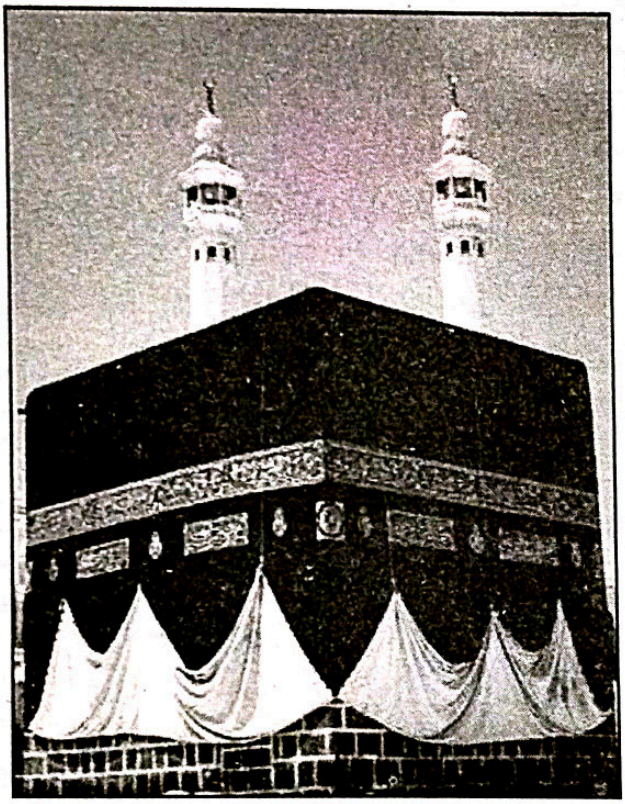

अगर कुरआन पर ग़ौर किया जाए तो पता चलेगा कि इसका केंद्रीय विषय पांच बातों पर है, पहला यह कि इसमें अल्लाह के नाम, जिनको 'अस्माए हुस्ना' कहा जाता है विस्तार के साथ बयान किये गये हैं इनमें ज़ाती नाम भी है और सिफ़ाती (गुणवाचक) नाम भी हैं यह ईमान बिल्लाह का हिस्सा है, दूसरे इसमें एक ईश्वर की इबादत का ज़िक्र किया गया है । इसमें तर्क दिया गया है कि क्यों केवल एक ही ईश्वर की इबादत की जाए, और यह भी आदेश दिया गया है कि इसके सिवा किसी को भी 'इलाह' (पूज्य प्रभु) न माना जाए । अगर कोई ऐसा कर रहा है तो उसे इससे रोकने का प्रयास किया जाए । यही एक सही रवैया है और मानो ईमान बिल्लाह का अनिवार्य तक़ाज़ा और व्यावहारिक अभिव्यक्ति है । तीसरे इसमें कई चीज़ों के करने से रोका गया है और कई चीज़ों के करने का आदेश भी दिया गया है 'अम्र व नही' इनको हुक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह का हक़) कहा गया है और यह भी मानो ईमान बिल्लाह का तक़ाज़ा है । चौथी बात यह भी बतायी गयी है कि एक अल्लाह की इबादत करने वालों को वह इस संसार में किस-किस प्रकार लाभांवित करता है, ऐसे लोग इस संसार में उसके उपकार और कृपा के पात्र हैं और आख़िरत में भी उनका अंजाम भलाई पर ही होगा । पांचवां यहां परिणामों के उदाहरण भी मिलते हैं अर्थात बहुदेववादियों का क्या अंजाम होने वाला है, संसार में भी और परलोक में भी यह सब ईमान बिल्लाह के अध्याय में आते हैं । (जिन लोगों को इसे विस्तार से देखना हो वे इन किताबों को देखें)

इस पहलू से देखा जाए तो जब भी इस्लाम को समझने और इसके अध्ययन की बात आएगी आरंभ ही ईमान बिल्लाह (अल्लाह पर ईमान) यानी एकेश्वरवाद से की जाएगी यह इसका बुनियादी रुक्न (स्तंभ) ही नहीं, बल्कि पूरा इस्लाम इसमें सिमटकर आ गया है । तौहीद (एकेश्वरवाद) के बिना इस्लाम की कोई कल्पना ही नहीं की जा सकती । तौहीद (एकेश्वरवाद) अर्थात एकमात्र ईश्वर पर ईमान और उसकी बन्दगी व इबादत ही की ओर सभी ईशदूतों ने बुलाया है । जितने भी नबी और संदेशवाहक आए यही संदेश लेकर आये । ईश्वर की पहचान की यह पहली सीढ़ी है और जिसको नज़रअन्दाज़ करके परम ईश्वर की पहचान संभव नहीं ।

ईश्वर को पहचानने का तरीक़ा

इस विषय को समझने और इस पर चर्चा करने से पहले यह आवश्यक है कि कुछ मुख्य विचारधाराओं के विकास के इतिहास पर एक दृष्टि डाल ली जाए ।

सत्रहवीं शताब्दी से इसका आरंभ करते हैं । सत्रहवीं

शताब्दी के मध्य तक ईसाई मत में एक ज़बरदस्त घमासान मचा था, शैक्षणिक व सैद्धांतिक स्तर पर एक ज़बरदस्त घमासान जारी था । यह घमासान विज्ञान और धर्म के बीच था, यह घमासान श्रेष्ठता की जंग थी, समय गुज़रने के साथ इसमें तेज़ी और कड़वाहट आती गयी । एडवर्ड हरबर्ट और वॉल्टेयर के अलावा बहुत सारे अमेरिकी लीडर जिनमें थॉमस पेन का काम उल्लेखनीय है इसमें आगे-आगे थे । वे प्राकृतिक नियम के पक्षधर थे, जिसमें ईश्वर के वजूद को तो मान्यता प्रदान की गयी है, मगर मार्गदर्शन अर्थात वह्य (ईश प्रकाशना) को नकारा गया है, इसमें बुद्धि पर बल दिया गया है, अर्थात मार्गदर्शन का ज़रिया बुद्धि को माना गया है । जबकि कलीसा वह्य को मार्गदर्शन का ज़रिया मानता था ।

इस दर्शन को लोकप्रियता प्राप्त हुई, इसके विभिन्न कारण थे जिनमें सबसे मुख्य कारण यह विचारधारा या सिद्धांत था कि ईश्वर के वजूद को बुद्धि से समझा जा सकता है । अर्थात बुद्धि से ईश्वर को पहचाना जा सकता है । इस सिद्धांत को मानने वाले कलीसा के रवैये से विमुख थे, कलीसा की शिक्षाएं उनको संतुष्ट नहीं कर रही थीं । कलीसा उनको संतुष्ट करने के स्थान पर ज़ोर-ज़बरदस्ती से काम ले रहा था । इस कारण तनाव बढ़ता गया यहां तक कि उनकी विमुखता घृणा में बदल गयी और उन्होंने वह्य से ही इन्कार कर दिया । उनका कहना था कि ईश्वर तक पहुंचने के लिए वह्य की कोई आवश्यकता नहीं है । उन्होंने कहा कि उनकी बुद्धि ही पर्याप्त है, ईश्वर को उनकी सहायत के लिए कोई जानकारी देने की कोई आवश्यकता नहीं है । इससे आगे बढ़कर उन्होंने यह कहना शुरू कर दिया कि इस ब्रह्मांड में अब ईश्वर के लिए कोई भूमिका ही नहीं रह गयी है । वे उसे बस स्रष्टा मानते थे, जिसने एक बार इस सृष्टि की रचना कर दी अब उसकी कोई आवश्यकता नहीं है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार कि घड़ी बनानेवाले ने घड़ी बना दी इसके बाद उसकी कोई ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती । अतएव इस सिद्धांत के अनुसार ख़ुदा ने इन्सान को बनाकर आज़ाद छोड़ दिया । अब उसे ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारनी है यह उस पर छोड़ दिया गया । यह निर्णय स्वयं इन्सान को करना है । आज यह आम इन्सानों के जीवन का सिद्धांत बन चुका है । आज का इन्सान इसकी आवश्यकता महसूस नहीं करता कि यह ज़िन्दगी किस तरह गुज़ारी जाए । इसका उत्तर प्राप्त करने के लिए किसी सुपरनेचुरल हस्ती से संपर्क करे । राजनीतिक शब्दावली में इस दर्शन को सेक्यूलरिज़्म के नाम से पुकारा जाता है । (सामान्यतया यह देखा गया है कि सिद्धांत, समय और अवस्थाओं की पैदावार होते हैं, फिर धीरे-धीरे वह वैश्विक रूप धारण कर लेते हैं । कलीसा का जो टकराव नयी विचारधारा के साथ हुआ और ईसाई दुनिया में उसने जो रूप धारण कर लिया इस्लामी दुनिया को वैसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ा । क़ुरआन के साथ ऐसा मामला नहीं है इसलिए कि यहां वैज्ञानिक सत्यता को नकारा नहीं गया, कलीसा के मामले में वह्य का इन्कार बाइबल का इन्कार के समान था लेकिन इस्लाम के साथ ऐसा कोई मामला नहीं आया । अगर नेचरियत के आवाहकों का सामना क़ुरआन के साथ पड़ता तो अवश्य ही ऐसी स्थिति पेश न आती जो कलीसा के साथ वास्ता पड़ने के कारण पैदा हुई) आगे चलकर इसको स्पष्ट किया जाएगा कि इस विचारधारा को मानने का क्या मतलब होता है । संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि इसको मानने के फलस्वरूप ईश्वर के दयावान व कृपाशीलता होने के गुण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, कि अपने बन्दों पर उसकी कृपा और दया है कि वह उन्हें इस संसार में पैदा करके हैरान व परेशान और ठोकरें खाने के

ख़ुशख़बरी ख़ुशख़बरी ख़ुशख़बरी

अल्हम्दुलिल्लाह ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह के बन्दों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने की ग़रज़ से सैयद अबुल आला मौदूदी (रह॰) का तर्जुमा क़ुरआन मजीद मय-मुख़्तसर हवाशी व मुक़द्दमा तफ़्हीमुल क़ुरआन (बिना अरबी मतन) हिन्दी, गुजराती और मराठी भाषा में मुफ़्त वितरण करने वालों के लिए केवल Rs. 20/- रुपये में उपलब्ध है। (साइज़ 20×30/16)

नमूने की कॉपी मुफ़्त प्राप्त करें और पढ़े-लिखे देशवासियों का नाम और पता भेजने की कृपा करें, ताकि उनके पास उपहारस्वरूप मुफ़्त कॉपी भेजी जा सके।

क़ुरआन को समझने के लिए अंग्रेज़ी अनुवाद संक्षिप्त टिप्पणी और परिचय सहित उपलब्ध है। (अनुवाद : सही इंटरनेशनल, रियाद, के॰एस॰ए॰)

VOICE OF QURAN

C/o Rich Decor, 247, Maulana Azad Road, Taj Manzil
Opp. B.M.C. Bank, Nagpada, (Mumbai)-400008
Tel. 23063564, Fax. 23087950, Mob. : 9920182816
Web : www.voiceofquran.info
E-mail : thevoiceofquran@ymall.com

लिए न छोड़ दे, बल्कि जीवन-यापन के लिए नियम व क़ानून भी प्रदान करे और उसे यह बताए कि इन्सान को इस संसार में भेजने का क्या उद्देश्य है ।

इस्लाम इसका बिल्कुल इन्कार नहीं करता कि इन्सान को सोचने-समझने की शक्ति व क्षमता प्रदान की गयी है । यह ईश्वर की ओर से एक उपहार है, और स्वाभाविक है । ऊपर जिन दार्शनिकों की चर्चा की गयी है उनके अलावा भी कोई वैज्ञानिक इससे इन्कार नहीं कर सकता है । हमारे आसपास और पूरे ब्रह्मांड में ऐसी कई निशानियां हैं जो ईश्वर के वजूद पर दलील हैं । मानव इतिहास में यह कभी भी चिंता का विषय नहीं रहा है । कुरआन इस स्थिति को इस प्रकार उल्लिखित करता है–''उनके रसूलों ने कहा, ''क्या अल्लाह के बारे में संदेह है जो आकाशों और धरती का स्रष्टा है ?'' (इबराहीम : 10) इनकी वास्तविक समस्या यह है कि वे ईश्वरीय गुणों से परिचित नहीं हैं और न ही प्रामाणिक सुरक्षित ईश्वरीय वह्य तक उनकी पहुंच हो सकी है, इससे मारिफ़ते इलाही (ईश्वर की पहचान) और हक़ीक़त खुलती है ।

इस्लाम हमें इससे आगाह करता है कि ईश्वर ने मानव को केवल पैदा ही नहीं किया है, बल्कि उसे सत्य ज्ञान की शक्ति व क्षमता भी प्रदान की है जो उसे अपने पालनहार की पहचान कराता है । एक हदीस के अनुसार, 'प्रत्येक बच्चा अपनी प्रकृति पर जन्म लेता है (अर्थात इस्लाम पर) (हदीस : बुख़ारी व मुस्लिम) इसका मतलब यह है कि मानव स्वभाव में सच्चाई को क़बूल करने का गुण मौजूद है, और ईश्वर का वजूद आरंभ से है । प्रत्येक मनुष्य में यह चीज़ मौजूद होती है । चाहे वह साधारण इन्सान हो चिंतक व दार्शनिक हो या कुछ और । कोई भी समझदार व नेक व्यक्ति इस शाश्वत सत्य से इन्कार नहीं कर सकता, बल्कि यह कहा जाए कि हर इन्सान के अन्दर अपने बनाने वाले को जानने, पहचानने और उसको मानने की इच्छा मौजूद होती है ।

ईश्वर अर्थात स्रष्टा के विषय में एक और बात समझने की यह है कि वह इसका अंश नहीं हैं बल्कि इससे अलग एक हस्ती है । वह इसके एहसास, अवलोकन, अनुभव से परे है, वह कोई ऐसी भौतिक वस्तु या काल्पनिक रूप नहीं है जिसको कहीं एकांत में पा लिया जाए या कल्पना कर ली जाए । ईश्वर को जानने और उससे संबंध स्थापित करने का केवल एक तरीक़ा है, उसकी ओर आया जाए उससे संपर्क साधा जाए, उसके द्वारा अवतरित वह्य को पढ़ा जाए और समझा जाए । इसके सिवा और कोई दूसरा रास्ता नहीं है । ईश्वर के द्वारा अवतरित वह्य कुरआन की शक्ल में और उसकी शिक्षाएं हदीसों की शक्ल में हमारे पास मौजूद हैं । कुरआन व सुन्नत ने अल्लाह के वजूद के संबंध में पायी जाने वाली सभी व्यर्थ बातों और विचारों का इन्कार कर दिया है, और एक अत्यंत साफ़ व पारदर्शी रूप प्रस्तुत कर दिया है । वह हमें यह बताती है कि वह हस्ती हाज़िर व नाज़िर है, हर जगह मौजूद है, इसमें ईश्वर के साथ इन्सान के ताल्लुक़ व संबंध के बारे में पाए जाने वाले सभी सवालों का सही जवाब भी मिलता है । ईश्वर के अस्तित्व और गुणों की पूरी व्याख्या हमें मिलती हैं । इसमें यह बताया गया है कि उसकी इबादत ही मानव जीवन का उद्देश्य व लक्ष्य है । आगे के पृष्ठों में इस्लाम में ईश्वर की कल्पना का विस्तार से उल्लेख करने का प्रयास किया गया है, इसके विषय में कदापि यह दावा नहीं है कि यह पूर्ण है, बल्कि एक तुच्छ प्रयास है ।

0291-2658786

HOTEL Crown Plaza

A/C & Non A/C Air Cooled Rooms & Dormitory

Opp. Minerva Centre,
Railway Station Road, Jodhpur-342001 (Raj.)
Cell : 9784856007, 9414110345

½ km from the railway station

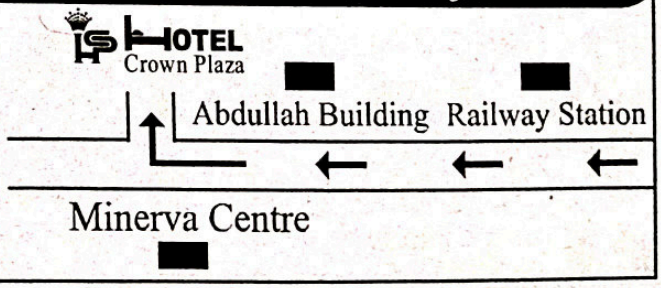

मेयारी तालीम ही बेहतर मुस्तक़बिल की ज़मानत है

बच्चों की बेहतर तालीम व तरबियत के पेशे-नज़र स्कूलों और मदरसों के लिए

इस्लामी तर्ज़ पर तैयार निसाबी किताबें

उर्दू, हिन्दी, अंग्रेज़ी, गणित, सामान्य ज्ञान, कंप्यूटर, इस्लामियात और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकें अंग्रेज़ी, उर्दू और हिन्दी तीनों भाषाओं में उम्दा काग़ज़, बेहतरीन प्रकाशन, मतन से हम आहंग दीदाज़ेब तस्वीरों के साथ पाठ्य-पुस्तकें प्रकाशित करने वाला

हिन्दुस्तान भर में मशहूर पहला इशाअती इदारा

भारत सरकार के क़ौमी दर्सियात (C.B.S.E & N.C.E.R.T) के ख़ाके के तहत बच्चों के स्वभाव और दिलचस्पी को ध्यान में रखते हुए मुसलसल जांच (C.C.E) के नये तक़ाज़ों के मुताबिक़ नामवर शिक्षण-संस्थाओं से जुड़े अनुभवी शिक्षकों के द्वारा तैयार की गयी पाठ्य-पुस्तकों के लिए संपर्क करें।

हम सारे तालीमी इदारों से भरपूर तआवुन की अपील करते हैं और अल्लाह तआला से दुआ करते हैं कि हम सबकी इस कोशिश को क़ुबूल फ़रमाए। आमीन!

इस्लामी पाठ्य-पुस्तकों का पहला इशाअती इदारा। उर्दू, हिन्दी मीडियम स्कूलों और मदरसों के लिए

Pioneer in Islamic Oriented Books for Urdu/Hindi Medium Schools & Madarsas

AL QALAM
Publications Pvt.Ltd.

Al Qalam

اَلْقَلَمْ پَبْلِیکِیشَنْز
پرائیویٹ لمٹیڈ

Regd. Office : 344, Gali Garhaiyya, Bazar Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110 006.
Phone : (Off.) 011-2324 1481, 2326 1481 (Godown) 011- 23631481
website : alqalampublications.com e-mail : alqalambooks@gmail.com



To place orders please e-mail us on : alqalambooks@gmail.com or WhatsApp : 9136393030

ईश्वरीय धर्म इस्लाम

■ मुहम्मद सद्रे आलम मिस्बाही

दुनिया की उत्पत्ति से लेकर इस्लाम के उदय तक अनगिनत ऐसे धर्म दुनिया में आए, जिनमें बहुत-सी ख़ूबियां और अच्छाइयां थीं । उन धर्मों ने मानवजाति को इबादत, नेकी और भलाई की प्रेरणा दी । गुनाहों और बुरी बातों से बचने की हिदायत भी की । लोक-परलोक के मामले में भी यथाशक्ति मानवजाति की रहनुमाई की, लेकिन उनमें से अक्सर धर्म सच्चे और इल्हामी होने के बावजूद चूंकि अपूर्ण थे और उनमें न तो मानवजाति के सामूहिक विकास का साथ देने की योग्यता थी और न ये इन्सान के आत्मिक संतोष के अलावा नैसर्गिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकते थे, इसलिए मानवजाति धीरे-धीरे इन धर्मों से दूर होती गयी और दुनिया बुरी तरह नास्तिकता और धर्म-विमुखता के घटाघोप अंधेरे में डूब गयी ।

धर्म से हट जाने के बाद मानवजाति की हालत यह हो गयी कि ख़ुदा और बन्दे का संबंध ख़त्म हो गया । फ़िरऔनियत और उद्दंडता की भावना दिमाग़ों पर हावी हो गयी । सामाजिक प्रबंध-व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी । हराम व हलाल का विवेक ख़त्म हो गया । गुनाह और सवाब में अन्तर बाक़ी नहीं रहा । नैतिकता और अनैतिकता का भेदभाव मिट गया । अश्लीलता और अपराध का दौर शुरू हो गया । कहने का तात्पर्य यह कि दुनिया दरिंदों और हैवानों से भी बदतर मख़्लूक़ की बस्ती बन गयी ।

पूरब से लेकर पश्चिम तक, उत्तर से लेकर दक्षिण तक दुनिया के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जब दरिन्दगी, अश्लीलता, व्यभिचार और सांप्रदायिकता का घटाघोप अंधेरा फैला हुआ था और दुनिया में अज्ञानता का सबसे बड़ा केंद्र अरब देश बना हुआ था, ऐसे असहिष्णुतापूर्ण हालात में अरब की ज़मीन पर अल्लाह तआला ने अपने महबूब पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए भेजा । आप (सल्ल०) ने पवित्र क़ुरआन की शिक्षा, अपने उच्च चरित्र और इस्लामी शरीअत की रोशनी से इस नश्वर संसार को प्रकाशमान कर दिया, जो अज्ञानता की अंधेरी खाई में डूबा हुआ था ।

इस्लाम की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने किसी पूर्व धर्म का खंडन नहीं किया, बल्कि एक कामिल और सर्वांगपूर्ण धर्म चूंकि दुनिया में आ गया था, इसलिए सारे पूर्व धर्म स्वत: निरस्त हो गया । आप (सल्ल०) ने जहां इस्लाम की आदर्श शिक्षाओं से मानवजाति को परिचित कराया, वहीं उनको पहले के सारे धर्मों और उनके धर्म-संस्थापकों के मान-सम्मान की भी हिदायत की । कहने का आशय यह है कि आप (सल्ल०) ने गुमराह इन्सानों को जिस इस्लाम धर्म से परिचित करवाया, वह एक ऐसा सर्वांगपूर्ण, सच्चा और ईश्वरीय धर्म है, जो दुनिया के हर प्रगतिशील इन्सान की दीनी और दुनियावी मामले में सच्ची रहनुमाई करता है और जो इन्सानी स्वभाव और इन्सानी ज़रूरतों के अनुसार है । अत: इसी सत्यनिष्ठ धर्म के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"अत: (ऐ नबी, और नबी के अनुयायियों) एकाग्र होकर अपना रुख़ इस धर्म की दिशा में जमा दो, क़ायम हो जाओ उस प्रकृति पर जिस पर अल्लाह तआला ने इन्सानों को पैदा किया है, अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती, यही बिल्कुल सीधा और ठीक धर्म है, मगर ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं । (क़ुरआन, 30:30)

इस्लाम की सच्चाइयों और शिक्षाओं पर जब ग़ौर किया जाता है, तो इन्सानी अंतरात्मा अपने आप पुकार उठती है कि निस्संदेह इस्लाम ईश्वरीय धर्म है, जिसमें इन्सान के इबादत की भावना के लिए अब्द व माबूद (उपासक और उपास्य) में संपर्क की सच्ची राहें मौजूद हैं । जिसमें आत्म-संतोष के लिए भी मुकम्मल सामान मिलता है, जिसमें ग़म और ख़ुशी, सभ्यता व समाज के लिए भी एक पूर्ण कार्यप्रणाली छिपी हुई है । जिसमें सांसारिक संघर्ष और परेशानियों का भी पूरा उपचार है । जिसमें सांसारिक रिश्तों की सारी नज़ाकतों से इन्सान को परिचित करा दिया गया है । जिसमें ख़ुदा और बन्दे के संबंध से लेकर इन्सान और जानवर तक के संबंध के सारे मदारिज (दर्जे) समझा दिये गये हैं । कहने का

तात्पर्य यह है कि जन्म से लेकर जवानी तक, जवानी से लेकर बुढ़ापे तक, बुढ़ापे से लेकर मौत तक और मौत से लेकर क़यामत तक की सारी मंज़िलों से मानवजाति को परिचित करा दिया गया है । यहां तक की इन्सान की दीनी और दुनियावी ज़िन्दगी का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है, जिसको अतृप्त छोड़ा गया हो ।

इस्लाम की यथार्थता और ईश्वरीय धर्म होने का इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है कि वह इस्लाम जिसको शुरू में रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पावन घर के सिर्फ़ तीन आदमियों ने क़बूल किया था, मगर एक संक्षिप्त अवधि में यह संपूर्ण विश्व पर छा गया । इसलिए नहीं कि इसकी तबलीग़ की गयी थी, बल्कि इसलिए कि इसमें लोकप्रिय होने की और संसार को अपने अन्दर आत्मसात करने की पूर्ण योग्यता मौजूद थी । दोस्त और दुश्मन जिसने इसकी सच्चाइयों पर ग़ौर किया वह इसी का हो गया और ऐसा हो गया कि न विरोधियों की यातनाएं उसको इस्लाम से हटा सकीं और न हुकूमत की तलवारें उसे सत्य धर्म से विमुख कर सकीं ।

बस जिसने इस्लाम को क़बूल कर लिया वह उसी का आशिक बनकर रह गया । जान दे दी, मगर इस्लाम को न छोड़ा । क्या इससे बढ़कर इस्लाम की यथार्थता, सत्यता और ईश्वरीय धर्म होने का और कोई प्रमाण हो सकता है ? इस्लाम धर्म के इसी बेपनाह कशिश का यह करिश्मा है कि आज जब दुनिया में हर तरफ़ नास्तिकता और बेदीनी की चर्चा है, इस वक़्त भी इस सत्य धर्म के एक सौ पचीस करोड़ से ज़्यादा अनुयायी मौजूद हैं और दिन-प्रतिदिन इनकी संख्या में वृद्धि होती ही जा रही है । एक सर्वे के अनुसार पूरी दुनिया में इस्लाम धर्म तेज़ी के साथ फैलने वाला अकेला धर्म है ।

सत्य धर्म के इन एक सौ पचीस करोड़ अनुयायियों की हालत यह है कि चाहे वे पूरी तरह इस्लाम की समस्त शिक्षाओं पर अमल न करें, लेकिन वे सच्चे दिल से इस धर्म को अंगीकृत करते हैं । उनके अक़ीदे अपनी जगह पूरी तरह मज़बूत हैं । उनमें दूसरी कमियां चाहे कितनी ही क्यों न मौजूद हों, लेकिन क्या मज़ाल कि कोई ताक़त अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज़ की उनसे उपासना करा सके और हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की रिसालत से उनको विमुख कर सके या इस्लाम की बुनियादी अक़ीदों से उनको डिगा सके ।

दुनिया में जितने भी धर्म आये उनकी किताबें बदल गयीं, उनके सिद्धांत बदल गये, उनकी शिक्षाएं बदल गयीं, लेकिन इस्लाम है कि साढ़े चौदह सौ साल से अधिक गुज़र जाने के बाद भी इस ईश्वरीय किताब क़ुरआन मजीद का एक-एक नुक़ता और एक-एक शब्द ज्यों का त्यों सुरक्षित है । इसके बुनियादी अक़ीदे फ़ौलाद की चट्टान की तरह इस नास्तिकता और बेदीनी के ज़माने में भी अटल हैं । इसके मानने वालों में तो कमज़ोरियां और ख़ामियां पैदा होती रही हैं और होती रहेंगी, लेकिन यह ईश्वरीय धर्म आज भी अपनी तमाम नूरानी तजल्लियों के साथ जलवागर है और क़यामत के दिन तक जलवागर रहेगा ।

इस्लाम अगर ईश्वरीय धर्म न होता, तो क्या वह इस दुनिया का साथ दे सकता था, जिसने गत पांच सौ साल के अन्दर आश्चर्यजनक रूप से तरक़्क़ी की है । इतना बड़ा भौतिक विकास जो दुनिया की उत्पत्ति से लेकर पांच सौ साल पहले तक कभी नहीं हुआ था, लेकिन यह हक़ीक़त है कि दुनिया के इन्तिहाई तरक़्क़ी कर जाने के बावजूद इसकी शिक्षाओं और मार्गदर्शनों की आज भी दुनिया मोहताज है । अगर यह ईश्वरीय धर्म न होता, तो मानवजाति ने इसे भी उसी तरह छोड़ दिया होता, जिस तरह पूर्व के धर्मों को हालात का साथ न देने की वजह से छोड़ दिया था, लेकिन यह तो एक ऐसा सर्वांगपूर्ण ईश्वरीय धर्म है, जिसे छोड़ने की कोशिश के बावजूद भी नहीं छोड़ा जा सकता और जिससे इन्तिहाई उपेक्षा करते हुए भी सहारा लिए बिना किसी का गुज़ारा हो ही नहीं सकता ।

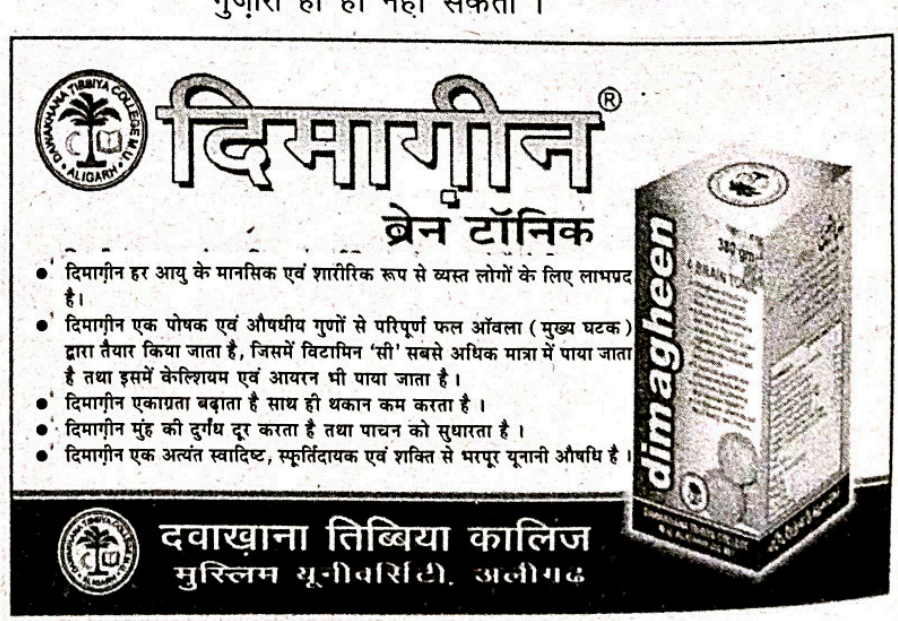

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) एक कुशल राजनीतिज्ञ के रूप में

■ मुहम्मद मुरसलीन जामई

रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के ज़रिए अल्लाह तआला ने जो दीन इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए भेजा, वह जिस तरह हमारे व्यक्तिगत जीवन में मार्गदर्शन करता है, उसी तरह हमारे सामूहिक जीवन के लिए भी मार्गदर्शन की हैसियत रखता है । जिस तरह वह इबादतों में राह दिखाता है, उसी तरह वह राजनीति का तरीक़ा भी बताता है और इसके दस्तूर भी हमें उपलब्ध कराता है । जितना संबंध इसका मस्जिद और मदरसों से है, उतना ही संबंध प्रशासनिक व्यवस्था से भी है । इस दीन के बारे में हमारे नबी (सल्ल०) ने हमें सिखाया भी और बताया भी है ।

इस घटना के बारे में हम सबमें से हर एक इन्सान जानता है कि नबी करीम (सल्ल०) को दुनिया में भेजे जाने से पहले अरब क़ौम राजनैतिक एतिबार से बहुत ही ख़स्ताहाल क़ौम थी । अल्लामा इब्ने खुल्दून ने इनकी गणना एक ग़ैर-राजनीतिक क़ौम के रूप में की है । अरबवासी अपने पूरे इतिहास में कभी भी एकता के सूत्र में बंधे नहीं थे । पूरी क़ौम लड़ाकू और युद्ध-कुशल क़बीलों का एक समूह थी, जिसकी पूरी शक्ति व योग्यता गृहयुद्धों और आपस की लूटमार में बर्बाद हो रही थी ।

ख़ुद क़ुरआन करीम ने उनको 'क़ौमालदा' के शब्दों से साकार किया है, जिसके अर्थ झगड़ालू क़ौम के हैं । नबी करीम (सल्ल०) ने बहुत ही कम समय में अपनी शिक्षाओं के माध्यम से क़ौम के विभिन्न तत्वों को इस तरह जोड़ दिया कि पूरी क़ौम एक शीशा पिलायी हुई दीवार बन गयी । केवल एकजुट ही नहीं हो गयी, बल्कि उसके अन्दर सदियों से पैदा हुए मतभेद भी एक-एक करके दूर होते गये । यह केवल वाह्य रूप से ही एकजुट नहीं हो गयी, बल्कि अपने आर्तरिक अक़ीदों और दृष्टिकोणों से भी आपस में हमरंग हो गयी ।

यह केवल ख़ुद ही संगठित नहीं हो गयी, बल्कि इसने पूरी इन्सानियत को भी एकता का सन्देश दिया और इसके अन्दर आदेश और आज्ञापालन दोनों चीज़ों की ऐसी विशेष योग्यता उभर आयी, जो केवल शायरों की भाषा में नहीं, बल्कि वृत्तांतों की भाषा में यह क़ौम उष्ट्रपालक के मक़ाम से शासनकर्ता के मक़ाम पर पहुंच गयी और इसने बिना किसी अपवाद के दुनिया की सारी क़ौमों को राजनीति और शासन का उपदेश दिया ।

इस तारीख़ (इतिहास) की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक बिल्कुल उसूली और इन्सानी तंज़ीम थी । इसके पैदा करने में नबी करीम (सल्ल०) ने न क़ौमी, नस्ली, भाषाई और भौगोलिक एतिबार से न कोई लाभ उठाया और न दुश्मनों से लोगों को डराया । दुनिया में जितने भी छोटे-बंड़े कुशल राजनीतिज्ञ हैं, उन्होंने हमेशा अपनी राजनीतिक योजनाओं की पूर्ति में ज़ुल्म व अत्याचार से काम लिया है ।

अगर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भी इन चीज़ों से लाभ उठाते, तो यह बात आपकी क़ौम के मिज़ाज के बिल्कुल मुताबिक़ होती, लेकिन आप (सल्ल०) ने न केवल यह कि उनसे कोई लाभ नहीं उठाया, बल्कि उनमें हर चीज़ को फ़ित्ना ठहरा दिया और हर फ़ित्ने का ख़ुद अपने हाथों से उन्मूलन किया । ख़ुदा की बंदगी व अनुपालन, इन्सानी भाईचारा, न्याय व इन्साफ़ और आख़िरत के भय आदि इन प्रेरकों से लोगों को जगाया । ये सारे प्रेरक बहुत ही श्रेष्ठ और पवित्र थे । इस तरह एक बेहतरीन उम्मत का अस्तित्व दुनिया के सामने आया । अल्लाह तआला क़ुरआन में फ़रमाता है-"अब संसार में वह उत्तम गिरोह तुम हो जिसे इन्सानों के मार्गदर्शन और सुधार के लिए मैदान में लाया गया है । तुम नेकी का आदेश देते हो, बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो ।" (क़ुरआन, 3:110)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की राजनीति और आपकी परिकल्पना का एक अहम पहलू यह भी है कि आप जिन उसूलों के दायी बनकर उठे, यद्यपि वह जैसा कि मैंने अर्ज़ किया अफ़राद, समाज और क़ौम की सारी ज़िन्दगी पर हावी थे । व्यक्तिगत व सामूहिक ज़िन्दगी का हर क्षेत्र उनके अहाते में आता था, लेकिन आप (सल्ल॰) ने अपने किसी उसूल व सिद्धांत के मामले में कभी कोई लचक क़बूल नहीं की, न दुश्मन के मुक़ाबले में न दोस्त के मुक़ाबले में ।

लेकिन आप (सल्ल॰) की पूरी ज़िन्दगी गवाह है कि आपने किसी दबाव में आकर, कभी भी किसी भी उसूल के मामले में कोई समझौता गवारा नहीं किया । इसी तरह आप (सल्ल॰) के सामने पेशकश भी की गयी और आपको तरह-तरह की दीनी व दुनियावी मस्लिहतें भी समझाने की कोशिश की गयी, लेकिन इस तरह की बदलाव व कोशिशें भी आपके किसी उसूल को बदलवाने में सफल न हो सकीं । जब आप (सल्ल॰) दुनिया से तशरीफ़ ले गये, तो इस हाल में तशरीफ़ ले गये कि आपकी मुबारक जुबान से निकली हुई हर एक बात अपनी-अपनी जगह पर एक पत्थर की लकीर की भाँति साबित व क़ायम थी ।

दुनिया के राजनीतिज्ञों में से आप किसी ऐसे राजनीतिज्ञ की निशानदेही नहीं कर सकते, जो अपने दो-चार उसूलों को भी दुनिया में लागू करने में इतना मज़बूत साबित हो सके और उसके संबंध में यह दावा किया जा सके कि उसने अपने किसी उसूल के मामले में कोई कमज़ोरी नहीं दिखायी या कोई ठोकर नहीं खायी, लेकिन आप (सल्ल॰) ने वह काम करके दिखाया, जो ज़माने के मज़ाक़ और रुझान से इतना बेजोड़ था कि वक़्त के कुशल राजनीतिज्ञ, इस अनोखे निज़ाम को पेश करने की वजह से आप (सल्ल॰) को दीवाना कहते थे, लेकिन नबी करीम (सल्ल॰) ने इस जीवन-व्यवस्था को अमली दुनिया में लागू करके यह साबित कर दिया कि जो लोग हुज़ूर अकरम (सल्ल॰) को दीवाना समझते थे, वे ख़ुद दीवाने थे ।

केवल यही नहीं कि आप (सल्ल॰) ने किसी व्यक्तिगत हित व मसलिहत के लिए किसी उसूल में कोई संशोधन नहीं किया, बल्कि अपने पेश किये गये उसूलों के लिए आप (सल्ल॰) ने क़ुरबानी भी दी । जान-माल और दूसरी सारी प्यारी चीज़ों की क़ुरबानी दी । हर तरह के ख़तरों को सहन किया और हर तरह के नुक़सानों पर सब्र किया, लेकिन उसूलों की हर हाल में रक्षा की । आप (सल्ल॰) की राजनीति इस एतिबार से भी दुनिया के लिए एक नमूना और मिसाल है कि आपने राजनीति को इबादत की तरह हर तरह की गंदगियों से पाक रखा ।

आप (सल्ल॰) जानते थे कि राजनीति में वे बहुत-सी चीज़ें जायज़, बल्कि कुछ हालात में पवित्र समझी जाती हैं, जो निजी ज़िन्दगी में मकरूह और हराम ठहरा दी जाती हैं । आप (सल्ल॰) ने अपने राजनीतिक जीवन से दुनिया को यह उपदेश दिया कि ईमानदारी जिस तरह व्यक्तिगत जीवन के बुनियादी सिद्धांतों में से है, उसी तरह सामूहिक और राजनीतिक जीवन के लवाजिम में से भी है । बल्कि एक आम व्यक्ति के झूठ के मुक़ाबले में एक सत्तासीन और एक बादशाह के झूठ को ज़्यादा बड़ा गुनाह ठहराया गया है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने अपनी ज़िन्दगी की एक लम्बी अवधि मजलूमियत (पीड़ित) की हालत में गुज़ारी और कमोबेश उतना ही समय अपनी सत्ता और सल्तनत में गुज़ारा । उस दौरान में आपको दोस्त और दुश्मन दोनों से अनेक तरह के राजनीतिक और व्यापारिक समझौते करने पड़े । दुश्मनों से कई जंगें करनी पड़ीं । प्रतिज्ञा भंग करने वालों के ख़िलाफ़ जवाबी क़दम उठाने पड़े । क़बीलों के प्रतिनिधिमंडलों से मामले करने पड़े, हुकूमत के प्रतिनिधियों से राजनीतिक बातचीत करनी पड़ी और राज़नीतिक वार्तालाप के लिए अपने प्रतिनिधिमंडल दूसरों के पास भेजने पड़े । कुछ बाहरी ताक़तों के ख़िलाफ़ फ़ौजी भी क़दम उठाने पड़े । ये सारे काम आप (सल्ल॰) ने अंजाम दिये, लेकिन दोस्त और दुश्मन हर एक व्यक्ति को यह बात स्वीकार है कि आपने कभी कोई झूठा वादा नहीं किया, आपने किसी बात की ग़लत तावील करने की कोशिश नहीं की । कोई बात कह देने के बाद उससे इन्कार नहीं किया, किसी समझौते का कोई उल्लंघन नहीं किया । दोस्तों का नाज़ुक से नाज़ुक हालात में भी साथ दिया और दुश्मनों के साथ बुरे से बुरे हालात में भी न्याय किया ।

अगर आप दुनिया के कुशल राजनीतिज्ञों को इस कसौटी पर परखेंगे, तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सिवा किसी को भी इस कसौटी पर खरा नहीं पाएंगे । यह बात भी याद रखने की है कि राजनीति में इबादत जैसी ईमानदारी

(शेष पृष्ठ 24 पर)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰)

■ अब्दुर्रहमान राफ़त पाशा

अल्लाह के नबी (सल्ल॰) के बाद, धरती का सर्वप्रथम मुसलमान कौन था ? वह कौन था जिसने सबसे पहले क़ुरआन को 'मुसहफ़' का नाम दिया और उसे एकत्रित करके एक पूर्ण ग्रंथ का रूप दिया ? इस्लामी इतिहास में सबसे पहले किस व्यक्ति ने बैतुलमाल (कोशागार) क़ायम किया ? सहाबियों में सबसे पहले किसने इज्तिहाद किया ? इस उम्मत का वह कौन-सा व्यक्ति है जो सबसे पहले स्वर्ग में प्रवेश करने का गौरव प्राप्त करेगा ? इस्लामी इतिहास में किस आदमी को सर्वप्रथम ख़लीफ़तुर्रसूल अर्थात 'हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सर्वप्रथम उत्तराधिकारी के रूप में जाना जाता है ?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर केवल एक है, और वह यह है कि इन तमाम विशेषताओं तथा गुणवत्ताओं का मालिक केवल एक व्यक्ति इस्लाम के इतिहास में गुज़रा है तथा वह व्यक्ति अबू क़ुहाफ़ा उस्मान बिन आमिर एवं उम्मुल ख़ैर सलमा बिन्ते सख़्र बिन आमिर के सुपुत्र हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबू क़ुहाफ़ा अर्थात हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) के सिवा और कौन हो सकता है ?

जीं हां ! वे सर्वप्रथम मुसलमान भी थे और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सर्वप्रथम उत्तराधिकारी भी । वे इस उम्मत के सिद्दीक़ (सबसे सच्चे इन्सान) भी थे और आप (सल्ल॰) के ससुर एवं हिजरत के सहयात्री भी, जिनको स्वयं आप (सल्ल॰) ने स्वर्ग जाने का सुसमाचार सुनाया, जिनकी सच्चाई एवं हक़परस्ती की गवाही ख़ुद आप (सल्ल॰) ने दी, जिनकी पवित्रता की साक्षी क़ुरआन की आयतें बनीं, जिनकी ईमानी लहरों ने असत्य के महलों को ध्वस्त करके रख दिया, जिनकी कथनी की मुलायमता एवं करनी की ज्योति आज भी दुनिया की निगाहों को चकाचौंध कर देती है, जिनके तमाम इन्सानों में सर्वोत्तम होने पर (नबियों तथा रसूलों के बाद) क़ुरआन एवं हदीस की सहमति की मुहर लग चुकी है, जिनके पीछे ख़ुद आप (सल्ल॰) ने सत्रह वक़्त की नमाज़ें पढ़ीं, वह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) के अतिरिक्त दूसरा भला कौन हो सकता है ?

नबियों तथा रसूलों (ईशदूतों) के बाद इतना महान व्यक्ति आकाश ने अपनी आंखों से देखा और न धरती ने उनके जैसा कोई दूसरा महान सपूत जन्म दिया । वे जून 573 ई॰ में पैदा हुए और 24 अगस्त 634 ई॰ को ईमान व अमल से परिपूर्ण जीवन गुज़ार कर अल्लाह को प्यारे हुए । अपने जीवन की इस थोड़ी-सी अवधि में उन्होंने इतने महान कारनामे अंजाम दिए कि दुनिया आज तक आश्चर्यचकित है । उनके सभी कारनामों को इस निबंध में पूर्णरूपेण नहीं समेटा जा सकता, फिर भी आइए हम उनके जीवन की वाटिका की दम भर के लिए सैर कर लें और अपने ईमान को ताज़ा हवा दें । क्या पता, हमारे जीवन के अंधियारों में उनके जीवन का कोई द्वीप जल उठे जिससे हमारा जीवन भी ज्योतिमान हो उठे !

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) पेशे से एक व्यापारी थे । उनका यह पेशा मुसलमान होने से पहले तो जारी रहा ही, मुसलमान होने के बाद भी उन्होंने इसी पेशे को इख़्तियार किये रखा । जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का देहांत हुआ और आप मुसलमानों के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बने, तब भी आपने इसी पेशे को जारी रखने का इरादा किया, किन्तु मुसलमानों ने यह कहते हुए आपको उस पेशे से मना कर दिया कि इससे मुसलमानों के कल्याणकार्यों को अंजाम देने में बाधा आएगी, और फिर तमाम मुसलमानों ने एकमत होकर दो दिरहम प्रतिदिन के हिसाब से सरकारी कोश से वेतन जारी कर दिया ।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) इस्लाम क़बूल करने से पहले भी क़ुरैश वंश के एक गणमान्य व्यक्ति थे । हर किसी के हृदय में उनके लिए सम्मानजनक स्थान था । इस सबके बावजूद जब उन्होंने इस्लाम का दामन थाम लिया तो उनको भी नाना प्रकार का कष्ट सहना पड़ा । उन्हें भी क़ुरैश ने इतनी यातनाएं दीं कि विवश होकर उन्होंने भी स्वदेश त्याग देने का मन बना लिया । स्वदेश त्याग देने की नीयत से वे

हब्शा की ओर चल भी पड़े । जब बर्कुल ग़िमाद नामक स्थान तक पहुंचे तो उनकी मुलाक़ात क़ारा नामी क़बीले के सरदार बिन दग़िना से हुई । उसने पूछा : अबू बक्र ! आप कहां जा रहे हैं ?

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने जवाब दिया : मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे स्वदेश त्याग देने पर विवश कर दिया है । अत: ऐसे स्थान की तलाश में जा रहा हूं, जहां मैं अपने रब की पूर्ण आज़ादी के साथ इबादत कर सकूं ।

बिन दग़िना ने कहा : आप जैसा व्यक्ति ख़ुद देश त्याग देता है और न ऐसा करने पर उसे विवश किया जा सकता है । आप तो ऐसे व्यक्ति हैं जो ग़रीबों की मदद करता है, रिश्तों को जोड़ता और निभाता है, दूसरों की मुसीबत दूर करता है और हक़ पर आने वाली मुसीबतों को दूर करने में सहायता करता है । आप लौट चलिए और अपने ही वतन में रहकर अपने रब की इबादत कीजिए । मैं आपको अमान देता हूं ।

बिन दग़िना की बात पर आप मक्का लौट आएं । आपके साथ बिन दग़िना भी आया और क़ुरैश के सामने घोषणा कर दी कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) को मैंने अमान दी है । अब वे मेरी अमान में मक्का में रहेंगे और अपने रब की इबादत करेंगे ।

क़ुरैश ने कुछ शर्तों के साथ बिन दग़िना की दी हुई अमान को स्वीकार कर लिया और हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने देश त्यागने की नीयत छोड़ दी ।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने अपने व्यक्तित्व में कुछ ऐसी आदिव्य विशेषताओं को समेट लिया था जिनमें उनका कोई भी मुक़ाबला नहीं कर सका । उन्हीं विशेषताओं में से एक यह भी थी कि वे धरती के सर्वप्रथम मुसलमान थे और इसी कारण से उन्हें ही सबसे पहले काफ़िरों ने अपनी प्रताड़ना का निशाना बनाया । एक बार वे काबा की ओर जा रहे थे कि क़ुरैश के एक दुष्चरित्र आदमी ने उनके सर पर मिट्टी डाल दी । संयोगवश उसी समय वलीद बिन मुग़ीरा या आस बिन वाइल का गुज़र उनके पास से हुआ । उन्होंने उससे कहा : देख रहे हो इस बेवक़ूफ़ आदमी ने मेरे साथ कैसा दुर्व्यवहार किया ?

उसने जवाब दिया : यह स्वयं तुम्हारी करनी का फल है । इसी तरह हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ही थे जिन्होंने सबसे पहले अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सुरक्षा की तथा इस राह में अनहद कष्ट झेले, मार खाई और अपमानित किये गये । लेकिन इस सबके बावजूद वे इस्लाम धर्म के प्रचार-प्रसार में जुटे रहे और वास्तविकता यह है कि वे ही इस्लाम के सर्वप्रथम प्रचारक बने । यह गौरव भी उन्हीं को प्राप्त है कि उन्होंने ही आप (सल्ल॰) के बाद इस्लाम का संदेश सबसे पहले दूसरों तक पहुंचाया और उनके हाथों बहुत से लोगों ने इस्लाम क़बूल किया, जिनमें हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत सअद बिन अबू वक़्क़ास, हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह, हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन, हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह, हज़रत अबू सलमा और हज़रत ख़ालिद बिन सईद (रज़ि॰) उल्लेखनीय हैं ।

इस्लाम के रास्ते में जिस व्यक्ति की दौलत सबसे पहले काम आयी अर्थात ख़र्च हुई, वह व्यक्ति भी हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ही थे । उन्होंने अपने माल-दौलत को इस्लाम के लिए मानो समर्पित कर रखा था । कई ग़ुलामों को उन्होंने अपने पैसे से ख़रीद कर आज़ाद किया । हज़रत बिलाल, हज़रत आमिर बिन फ़ुहैरा, हज़रत नज़ीरा, हज़रत जारिया और हज़रत बिन्ते नहदिया (रज़ि॰) कुछ ऐसे ही ग़ुलाम तथा बान्दियों के नाम हैं जिनको हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) ने अपने पैसे से ख़रीद कर सिर्फ़ इसलिए आज़ाद कराया ताकि अल्लाह उनसे ख़ुश हो और वह ग़ुलाम एवं बान्दियां, अपने मालिकों की प्रताड़ना से निजात पा सकें ।

इस बात की गवाही स्वयं अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने दी है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) का माल इस्लाम के लिए जितना लाभकारी सिद्ध हुआ, उतना किसी भी अन्य मुस्लिम व्यक्ति का माल नहीं हो सका । हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) बयान करते हैं कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया : अबू बक्र (रज़ि॰) के धन से मुझे जितना लाभ हुआ उतना किसी के धन से नहीं हुआ ।

यह सुनकर हज़रत अबू बक्र (रज़ि॰) रो पड़े और कहा : मैं और मेरा धन तो आपको ही समर्पित हैं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)!

इस मामले में उनका कोई प्रतियोगी नहीं बन सका । हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि॰) का बयान है कि एक बार आप (सल्ल॰) ने हम लोगों को इस्लाम की राह में दान देने का आदेश दिया । संयोगवश, उस समय मेरे पास अच्छा-ख़ासा रुपया-पैसा था । मैंने उसका आधा अपने पास रखकर आधा

आप (सल्ल०) की सेवा में न्योछावर कर दिया । आप (सल्ल०) ने पूछा : उमर ! तुमने अपने घर वालों के लिए कितना बचाकर रखा ? मैंने कहा : इसका आधा ।

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) अपने पास जो कुछ था सब ले आये । आप (सल्ल०) ने पूछा : अबू बक्र ! तुमने अपने घर वालों के लिए कितना माल घर पर छोड़ा है ?

उन्होंने कहा : उनके लिए मैं अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) का नाम घर पर छोड़ आया हूं ।

यह सुनकर मैंने कहा : जब मैं कभी भी इन (अबू बक्र रज़ि०) पर किसी भी नेक काम में बाज़ी नहीं ले जा सकूंगा ।

सत्य भी यही है कि उन पर कोई भी व्यक्ति किसी भी नेक काम में बाज़ी नहीं ले जा सका । इस बात पर उम्मत का मतैक्य है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) संपूर्ण सहाबियों में सबसे बड़े ज्ञानी, सबसे ज़्यादा परहेज़गार, सबसे अधिक निडर एवं जांबाज़ तथा अल्लाह के रसूल (सल्ल०) उनके और वे आप (सल्ल०) के प्रियतम व्यक्ति थे । हज़रत अम्र बिन आस (रज़ि०) बयान करते हैं कि नबी (सल्ल०) ने मुझे जातुस सलासिल की जंग में मुस्लिम फ़ौज के साथ भेजने का इरादा किया तो मैं आप (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और आपसे पूछा : ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! आपकी नज़र में दुनिया का प्रियतम व्यक्ति कौन है ?

आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : आइशा (रज़ि०)।

मैंने पूछा : और पुरुषों में ?

आप (सल्ल०) ने उत्तर दिया : उसके पिताजी ।

मैंने पूछा : फिर कौन ?

फ़रमाया : उमर बिन ख़त्ताब ।

उनके बाद कई और नाम भी आप (सल्ल०) ने गिनाए।

उसी तरह हज़रत अबू दरदा (रज़ि०) बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया : अल्लाह तआला ने मुझे तुम सब लोगों की ओर नबी बनाकर भेजा और तुम सबने मुझे झुठला दिया, परन्तु हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने मुझ से कहा : आप सच कह रहे हैं और इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने अपनी जान और माल को मेरे लिंए समर्पित कर दिया ।

हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के नबी (सल्ल०) की शिशुकाल ही से संगत और प्रेम ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को तराश कर ऐसा हीरा बना दिया जिसका हर कोना सुन्दर हो गया था । जब तक आप (सल्ल०) जीवित रहे, उन्होंने आप (सल्ल०) की देखा-देखी हर वह कार्य किया जो पुण्यदायी था और जब आप (सल्ल०) अल्लाह के प्यारे हो गये तो उन्होंने आप (सल्ल०) की सुन्नत को अपने जीवन का सूत्रधार बना लिया । यही कारण था कि वे एक ऐसे मानव के रूप में मानव-इतिहास में अजर-अमर हो गये जिससे ज़्यादा निपुण तथा महान मानव की कल्पना भी नहीं की जा सकती । देखा गया है कि जब इन्सान बड़े पद पर आसीन हो जाता है तो उसके अन्दर एक अहंकार पैदा हो जाता है, वह दूसरों को बहुत छोटा समझने लगता है, लेकिन हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के अन्दर वैसे तो पहले भी अहंकार की छाया न पड़ी थी लेकिन मुसलमानों के ख़लीफ़ा (उत्तराधिकारी) बनने के बाद उनके अन्दर और ज़्यादा नम्रता आ गयी । उन्होंने मुसलमानों का ख़लीफ़ा बनने के बाद जो सबसे पहले वक्तव्य दिया, उसमें ज़ाहिर कर दिया कि हर मनुष्य अपने कर्म से तोला जाना चाहिए । उन्होंने कहा : "लोगो ! मैं तुम्हारा उत्तराधिकारी बना दिया गया हूं, जबकि मैं तुम लोगों से अधिक बेहतर नहीं हूं । अगर मैं अच्छा काम करूं तो उसमें तुम लोग मेरी मदद करो और अगर बुरा काम करूं तो मुझे सीधा कर दो ।

हां, इसमें याद रखने की एक बात यह है कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) उनके लिए नम्र एवं नर्म व्यक्ति थे जो हक़ के पंथ पर चलते हैं अन्यथा, उनके जीवन के मानस पटल पर नाहक़ के लिए कोई जगह नहीं थी । आप (सल्ल०) ने एक दिन अपने सहाबियों से पूछा : आज तुममें से कौन रोज़े से है ?

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा : मैं ।

फिर आप (सल्ल०) पूछते गये : आज किसी के जनाज़े में कौन शरीक हुआ ? किसने किसी बीमार की इयादत की ? आज ही, किसने दान किया ? और हर प्रश्न के उत्तर में केवल हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ही कह सके कि मैंने उन तमाम पुण्य कार्यों को आज ही के दिन अंजाम दिया है । नबी (सल्ल०) अंत में फ़रमाते हैं कि जिसने एक दिन इन सभी पुण्य कार्यों को अंजाम दिया, वह अवश्य ही स्वर्ग में प्रवेश करेगा ।

यह सब कुछ सही किन्तु उन्होंने बातिल के सामने कदापि सर नहीं झुकाया । इसकी रोशन मिसाल उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) की कमान में उस लश्कर को मदीने से बाहर

यलगार के लिए भेजना है जिसे खुद आप (सल्ल०) ने गठित किया था लेकिन उसे विदा करने से पहले ही आप (सल्ल०) का देहांत हो गया। दूसरी मिसाल यह है कि जब आप (सल्ल०) के मरनोपरांत अरब क़बीले इस्लाम से फिर गये और कुछ क़बीलों ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया तो हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने उन सबसे युद्ध किया यहां तक कि सारे फ़ित्ने दब गये और हर ओर इस्लाम का बोलबाला हो गया। यही नहीं, ऐसी बहुत सारी मिसालें इतिहास के पन्नों पर मौजूद हैं जिनसे हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) का सारे इन्सानों और विशेषतया सारे सहाबियों से सर्वोत्तम होना सिद्ध होता है और इस बात को वही नकार सकता है जिसके दिल व दिमाग़ पर शैतान का क़ब्ज़ा हो। परिणामस्वरूप हम दो-एक ऐसे सहाबियों का कथन नक़ल कर देना मुनासिब समझते हैं ताकि उन लोगों के लिए दलील एवं तर्क उपलब्ध हो सके जिन्होंने इस महानतम मानव को अपनी जुबानी प्रताड़ना का आज तक निशाना बना रखा है–

हज़रत बिन अबी लैला बयान करते हैं कि एक बार कुछ लोगों में इस बात पर मतभेद हो गया कि आप (सल्ल०) के बाद सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हैं या हज़रत उमर (रज़ि०)? उतारूद क़बीले से ताल्लुक़ रखने वाले एक व्यक्ति ने कहा कि हज़रत उमर (रज़ि०) हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) से ज़्यादा उत्तम हैं, जबकि संभवत: जारूद बिन मुअल्ला ने कहा कि नहीं, हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हज़रत उमर (रज़ि०) से ज़्यादा श्रेष्ठ हैं।

जब इस मतभेद की सूचना हज़रत उमर (रज़ि०) को मिली तो उतारूद क़बीले के उस आदमी को उन्होंने कोड़े से मारा, फिर जारूद को अपने पास बुलाकर कहा : अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के बाद सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हैं। यदि कोई इसके अलावा कोई दूसरी बात कहता है तो हम उस पर वही दंड लागू करेंगे जो आरोप लगाने वाले पर लागू किया जाता है।

हज़रत अम्र बिन हुसैन (रज़ि०) कहते हैं कि मैंने हज़रत अली (रज़ि०) को मिम्बर पर खुत्बा देते हुए सुना। उन्होंने अपने खुत्बे में कहा : मैं तुम सब लोगों को बताए देता हूं कि इस उम्मत के सर्वश्रेष्ठ आदमी हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) हैं और उनके बाद हज़रत उमर (रज़ि०)।

इतना ही नहीं, बल्कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) के बयान के अनुसार नबी (सल्ल०) के ज़माने में जिन तीन सर्वश्रेष्ठ लोगों की सूची बनायी जाती थी, उनका क्रमांक इस तरह हुआ करता था : अबू बक्र, उमर और उस्मान (रज़ि०)। यह है हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की जीवन की हल्की-सी झलक जिसमें आप उनके चरित्रमानस की छटाओं का दर्शन कर सकते हैं और अपने जीवन में उनके चरित्र से सीख लेकर सद्गुणों का अलख जगा सकते हैं। अल्लाह हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) पर अपनी दया एवं कृपा की बरसात करे कि वे वाक़ई इस उम्मत के सर्वोत्तम तथा सर्वश्रेष्ठ इन्सान थे।

(पृष्ठ 20 का शेष)

और सच्चाई क़ायम रखने के बावजूद आप (सल्ल०) को अपनी राजनीति में कभी किसी असफलता का अनुभव नहीं करना पड़ा। इसके अलावा आप (सल्ल०) ने यहूदियों की राजनीतिक साज़िशों का भी अन्त किया, लेकिन फिर भी रक्तपात बहुत कम हुआ।

आप (सल्ल०) से पहले का इतिहास गवाही देता है और आज की घटनाएं भी गवाही दे रही हैं कि दुनिया के छोटे से छोटे इंक़िलाब में भी हज़ारों-लाखों जानें चली जाती हैं और धन व संपत्तियों की बर्बादी का कोई आकलन नहीं किया जा सकता, लेकिन नबी करीम (सल्ल०) के मुबारक हाथों से निकली हुई उसकी अज़मत व बिसात के बावजूद शायद उन जानों की संख्या कुछ सौ से ज़्यादा नहीं होगी, जो जिद्दोजहद के दौरान आप (सल्ल०) के साथियों में से शहीद हुए या चिर विरोधियों के आदमियों में क़त्ल हुए, जबकि मामूली से मामूली इंक़िलाब में भी हज़ारों-लाखों जानों का चला जाना बहुत छोटी बात है।

जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मजलिस में तशरीफ़ रखते, तो इस तरह घुल-मिलकर बैठते थे कि यह विभेद करना मुश्किल हो जाता था कि नबी कौन और उम्मती कौन। खाना खाने के लिए बैठते थे तो दोजानू होकर बैठते थे और फ़रमाते थे कि मैं अपने रब का गुलाम हूं और गुलाम इसी तरह बैठकर खाना खाते हैं। दुनिया के सारे राजनीतिज्ञों की पूरी सूची उठाकर देख लीजिये, उनमें से कोई भी ऐसा नज़र नहीं आता, जिसने अपनी सादा ज़िन्दगी गुज़ारकर और हमेशा ज़मीनी सतह पर रहकर इतने कम समय में पूरी दुनिया में अपने तो अपने, ग़ैरों को भी क़ायल कर लिया हो। निस्संदेह अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से बढ़कर दुनिया ने कोई कुशल राजनीतिज्ञ न देखा है और न क़यामत तक देखेगी।

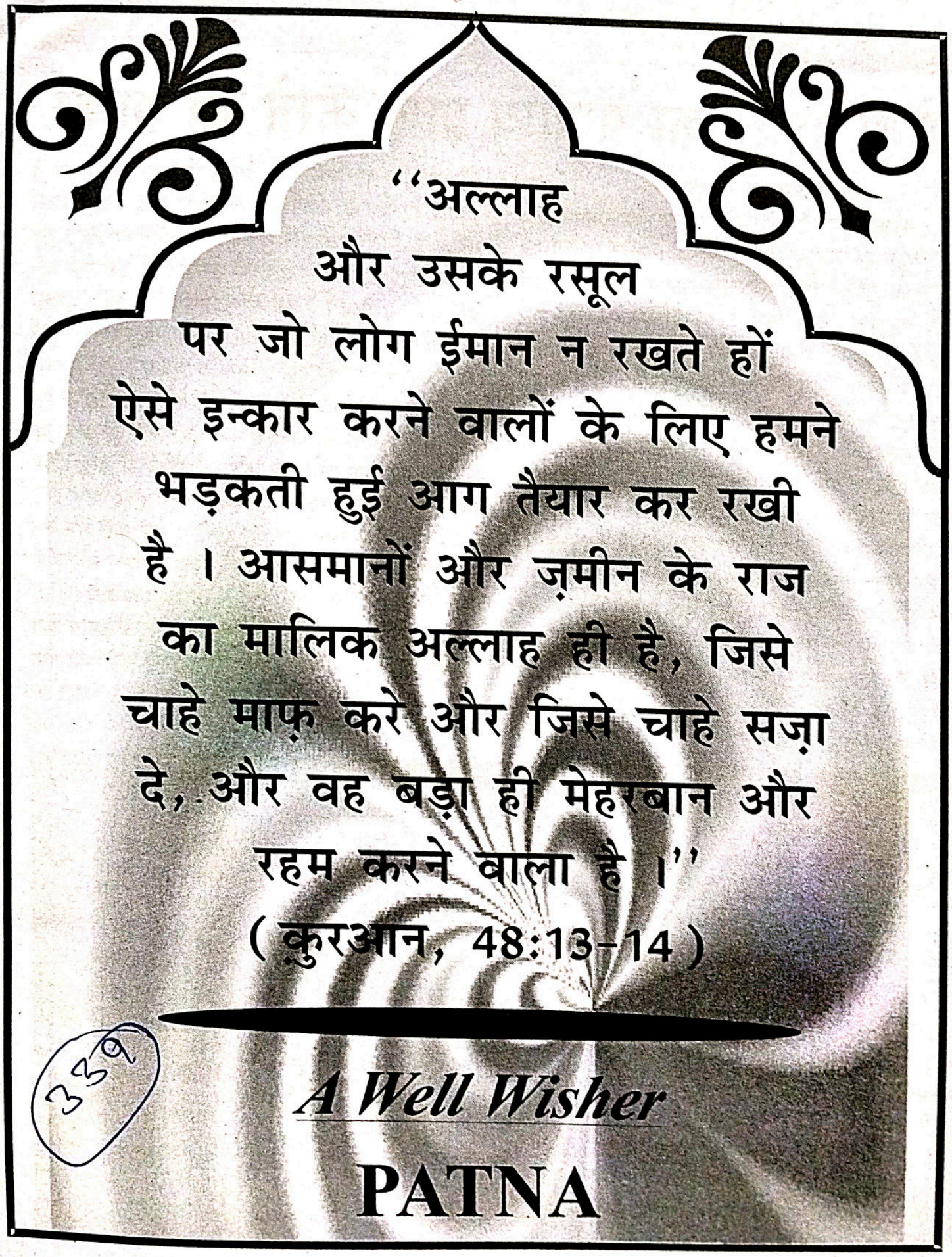
"अल्लाह
और उसके रसूल
पर जो लोग ईमान न रखते हों
ऐसे इन्कार करने वालों के लिए हमने
भड़कती हुई आग तैयार कर रखी
है । आसमानों और ज़मीन के राज
का मालिक अल्लाह ही है, जिसे
चाहे माफ़ करे और जिसे चाहे सज़ा
दे, और वह बड़ा ही मेहरबान और
रहम करने वाला है ।"
(क़ुरआन, 48:13-14)
339
A Well Wisher
PATNA

रोजा ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करने का साधन

■ सलमान अब्दुस्समद

आदिकाल से ही रोज़ा या व्रत ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन रहा है । संसार के विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाने वाले लगभग सभी धर्मों में चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, रोज़ा किसी न किसी रूप में मौजूद है । रोज़ा में बहुत-सी सांसारिक और पारलौकिक तत्वदर्शिता छुपी हुई है । जिस माहौल में क़ुरआन द्वारा इसकी अनिवार्यता का आदेश दिया गया उसमें भी बड़ी तत्वदर्शिता है । रोज़ा सन दो हिजरी में मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत पर अनिवार्य किया गया । यह वह समय था, जब मुसलमान मक्का से पलायन करके मदीना आ चुके थे । उनकी तंगी और परेशानियों का दौर ख़त्म होने लगा था और वे ख़ुशहाली की ओर बढ़ने लगे थे । 15 वर्षों में एकेश्वरवाद की आस्था उनके अंदर जड़ पकड़ चुकी थी । अगर मक्का में तंगी और ग़रीबी के जीवन में उन पर रोज़े का आदेश आ जाता तो यह आदेश उन पर बहुत मुश्किल होता । उन मुसलमानों के दिलों में यह आशंका पैदा होती कि तंगी और ग़रीबी के जीवन का ही दूसरा नाम रोज़ा है ।

रमज़ान वह महीना है जिसमें क़ुरआन का अवतरण हुआ । रमज़ान के महीने की यह विशेषता है कि यही वह महीना है जिसमें क़ुरआन उतारा गया, जिसके कारण यह पवित्र और महान है । यह भी सच्चाई है कि रोज़े की अनिवार्यता 2 हिजरी में हुई और रमज़ान का महीना उसकी अनिवार्यता से पहले ही महान था । रोज़ा और रमज़ान में इस हद तक कोई समानता नहीं है, क्योंकि क़ुरआन के अवतरण का सिलसिला मक्का से ही जारी था, मगर अल्लाह ने इस महीने को क़ुरआन के अलावा रोज़े भी दिये हैं जिससे रोज़ा और रमज़ान एक दूसरे के लिए अनिवार्य हो गये । इस समानता ने रमज़ान को और भी महत्वपूर्ण बना दिया ।

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह उन लोगों पर किये गये थे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं । (क़ुरआन, 2:183)

इस आयत से पहले पहल जहां रोज़े के अनिवार्य होने की सूचना मिलती है वहीं इसका भी उल्लेख कर दिया गया है कि यह कोई नया आदेश नहीं है, बल्कि इससे पहले के धर्मों में भी रोज़े की कल्पना मौजूद थी । वे भी रोज़े को



विभिन्न धर्मों में रोज़े की कल्पना

ईश्वर का सामीप्य प्राप्त करने का माध्यम मानते थे । साथ ही साथ इस आदेश को पूरा करने का उद्देश्य और उसकी उपयोगिता भी स्पष्ट कर दी गयी है । इस्लामी महीनों में रमज़ान का जो विशिष्ट स्थान है वह किसी और महीने को प्राप्त नहीं है । उसका महत्व और उसकी विशेषता से लोग अनभिज्ञ भी नहीं हैं । यह उचित मालूम होता है कि उन धर्मों और मतों पर एक दृष्टि डाली जाए जिनमें रोज़े की कल्पना है चाहे उनके रोज़े का स्वरूप और उनकी वास्तविकता इस्लाम के रोज़े से विभिन्न ही हो और उसका संबंध ऊपर वर्णित आयत से भी न हो । दुनिया के जिन प्राचीन धर्मों में रोज़े की वास्तविकता पूरी तरह मौजूद थी या है उन धर्मों में हमारे देश के हिंदू धर्म का नाम मुख्य है । इसके एक प्रतिनिधि टी॰एम॰ महादेव जो मद्रास विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष भी रह चुके हैं, उन्होंने हिंदू धर्म में व्रत के बारे में एक जगह लिखा है–

उन त्योहारों में जिनको वार्षिक आधार पर मनाया जाता है कुछ त्योहार व्रत के लिए विशेष हैं जो आत्मा की शुद्धता और हृदय को पवित्र करने के लिए रखे जाते हैं । हिंदू धर्म में विशेष धार्मिक अनुष्ठानों और पूजा-पाठ के लिए कुछ दिन निर्धारित कर लिए गये हैं जिनमें व्रत रखे जाते हैं । व्रत की हालत में खाना-पीना वर्जित होता है और लोग रात-रात भर पूजा-पाठ में लगे रहते हैं । उनमें सबसे प्रसिद्ध त्योहार जो हिंदू के सभी वर्गों में प्रचलित है एकादशी है । लोग उन दिनों में व्रत रखते हैं और रातों को पूजा करते हैं ।

हर हिन्दी महीने की 11 और 12 तारीख़ को ब्राह्मण एकादशी और द्वादशी का व्रत रखते हैं । आंकड़ों के आधार पर उन पर साल में 24 व्रत होते हैं । कुछ ब्राह्मण कार्तिक के महीने के हर मंगलवार को भी व्रत रखते हैं । भारत के सभी धर्मों में व्रत की कठोर शर्तें हैं । जैन धर्मावलंबियों में 40 दिनों का एक व्रत होता है । इसके अलावा गुजरात और दक्षिण भारत के जैनी हर साल कई-कई सप्ताह का व्रत भी रखते हैं ।

ऐसे व्रत में खाना-पीना पूर्णत: वर्जित नहीं होता है । व्रत की हालत में भी वे कुछ चीज़ों से बचते हैं और कुछ चीज़ें खाते हैं । इसी तरह प्राचीन मिस्र में भी रोज़ा या व्रत अन्य धार्मिक त्योहारों के रूप में दिखायी देता है । प्राचीन यूनान



के मुख्य धार्मिक त्योहार थिस्मोफोरिया के अवसर पर केवल वयस्क महिलाएं ही व्रत रखती हैं । पारसी धर्म में उनके सामान्य अनुयायियों पर रोज़े अनिवार्य नहीं हैं, लेकिन उनकी ईश्वरीय किताब की एक पंक्ति से सिद्ध होता है कि रोज़े का आदेश उनके यहां भी मौजूद था । विशेष रूप से धार्मिक व्यक्तियों के लिए तो पंचवर्षीय व्रत अनिवार्य था ।

जहां तक यहूदी धर्म में रोज़े का संबंध है तो उनके यहां भी यह अनिवार्यता ईश्वरीय है । हज़रत मूसा (अलैहि०) तूर नाम के पहाड़ पर 40 दिनों तक भूखे प्यासे रहे थे । सामान्य रूप से उनके अनुकरण में यहूदी धर्म में 40वें दिन का रोज़ा रखना बहुत महान धार्मिक काम है । तूर पर बिताये हज़रत मूसा (अलैहि०) का 40वां दिन यहूदी धार्मिक कैलेंडर के सातवें महीने 'तश्रीन' की दसवीं तारीख़ को पड़ता है । इसी लिए वह 'आशूरा' यानी 10वां दिन के नाम से जाना जाता है । यही वह आशूरा है जिस दिन हज़रत मूसा (अलैहि०) को तौरात के 10 आदेश दिये गये थे । इसके अलावा यहूदी ग्रंथों में दूसरे व्रत के आदेशों का भी उल्लेख है ।

बहुत से ऐसे व्रत हैं जिनकी अनिवार्यता यहूदी ज्ञानियों के विवेक पर है । वे सूखा आदि प्राकृतिक आपदा या किसी संकट और ख़तरे की स्थिति में और सरकार के अत्याचार और हिंसक क़ानूनों से सुरक्षा की दृष्टि से ऐसे व्रत का आदेश दे सकते हैं । ऐसे व्रत का समय और अवधि भी अलग है । ये सुबह सूर्योदय के दो घंटे बाद से शुरू होकर रात का अंधेरा छा जाने तक जारी रहता है । कुछ व्रत एक शाम से शुरू होकर अगली शाम तक चलते हैं । यहूदियत में व्रत की हालत में पुण्य और समाज सेवा के कामों का बहुत महत्व समझता जाता है । उसी तरह ग़रीबों और अभाव ग्रस्त लोगों को खाना खिलाना भी बहुत महान समझा जाता है । उनके यहां बहुत से व्रत ऐसे भी हैं जिनमें केवल मांस, मछली और मदिरापान से बचने का आदेश है ।

हज़रत ईसा (अलैहि०) ने किसी जंगल में 40 व्रत रखे थे हज़रत यहया (अलैहि०) जो उनके ही समकालीन थे वे भी व्रत रखते थे । उनकी अनुयायी भी व्रत रखने वाले थे । जैसा कि उल्लेख है कि यहूदियों ने विभिन्न समयों में विभिन्न प्रकार के व्रत बढ़ा लिए थे । उनमें से बहुत से व्रत दुख के थे । वे दुख की घड़ी में अपने आपको बिल्कुल दुखी बना लेते थे, ताकि देखने वालों पर उसका प्रभाव पड़े । हज़रत ईसा (अलैहि०) ने अपने अनुयायियों को ऐसे व्रत रखने से मना किया । उन्होंने कहा कि जब तुम रोज़े रखो तो अपना रंग-ढंग ऐसा न बनाओ के देखने वालों को तुम्हें दुखी, उदास और चिंतित समझे । बल्कि व्रत जैसे महत्वपूर्ण आदेश की पूर्ति करते समय तुम सर में तेल डालो साफ़-सुथरे रहो, सफ़ाई का विशेष ध्यान रखो, मुंह धोया करो और प्रसन्नचित रहो । न कि यहूदियों की तरह मुरझाए-मुरझाए चेहरे लिए फिरो ताकि लोगों को यह ख़याल हो कि तुम ने व्रत रखा हुआ है ।

एक बार हज़रत ईसा (अलैहि०) के अनुयायियों ने उनसे विशेष अंदाज़ में सवाल किया हम पवित्र आत्माओं को किस तरह अपने शरीर से दूर करें ? क्या कोई तरीक़ा है कि हमारे हृदय पवित्र हो जाएं और उनमें ताज़गी आ जाए । उन्होंने जवाब दिया कि ईश्वर से प्रार्थना करो और व्रत रखो । इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण माध्यम व्रत है । उस धर्म में हज़रत ईसा (अलैहि०) के बाद बहुत से अनुचित संशोधन होते रहे, जिसमें व्रत का स्वरूप भी बदल गया । पहले रोज़ा एक दिन का होता था, तो कोई दो दिन का और कोई 40 घंटे का होता था । इसी तरह बपतिस्मा की इच्छा रखने वालों के लिए कुछ रोज़े की पूर्ति अनिवार्य थी ।

बहुत से व्रत ऐसे हैं जो ऐच्छिक और वैकल्पिक हैं । वे उनके ज्ञानियों के विवेक पर निर्भर हैं । इसी तरह उनके यहां समय-सीमा का निर्धारण का अधिकार भी रोज़ा रखने वाले को दिया जाता है । वे खाना-पीना पूरी तरह छोड़ सकते हैं या खाने पीने को कम कर सकते हैं । कुछ व्रत ऐसे हैं जिनमें कुछ निश्चित खाद्य पदार्थ को व्रत के प्रतिकूल समझा जाता था । कहीं आग पर पकाए गये खाने को तो कहीं मांस, मछली, मदिरा आदि को व्रत के विपरीत समझा जाता था । इस तरह के मानव हस्तक्षेप से रोज़े की उपयोगिता की प्राप्ति तो दूर रोज़े की सच्चाई भी समाप्त हो गयी । फिर अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की शरीयत में रोज़े को अल्लाह के आदेशानुसार पुनः निर्धारित किया गया । उसकी सीमाएं निर्धारित की गयीं और हर तरह की अति से बचाया गया और अब रोज़ा अपने वास्तविक रूप में इस्लाम में मौजूद है ।

रमज़ान : मानव सेवा का महीना

● संपादन प्रभाग

रमज़ान का मुबारक महीना जल्दी ही शुरू होने वाला है । क़ुरआन और हदीसों में इस मुबारक महीने की अनगिनत ख़ूबियां बतायी गयी हैं । ख़ुद अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) इस मुबारक महीने का बहुत ही ज़्यादा एहतिमाम फ़रमाते थे । अल्लाह के रसूल का इरशाद है कि जिसने ईमान और आत्म परीक्षण के साथ रमज़ान के रोज़े रखे उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं । एक और रिवायत में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि जिसने रमज़ान के महीने में ईमान और आत्म परीक्षण के साथ दिन में रोज़ा रखा और रातों को क़ियाम किया, अर्थात खड़े होकर तरावीह की लम्बी नमाज़ पढ़ी, उसके पिछले सारे गुनाह माफ़ हो जाते हैं । अत: यह कहा जा सकता है कि रमज़ान में सियाम (रोज़े) और क़ियाम एक-दूसरे के पूरक हैं । क़यामत में यही दोनों, रोज़े और क़ुरआन बंदे की सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश क़बूल भी होगी ।

क़ुरआन और हदीस का अध्ययन किया जाए तो रमज़ान के उद्देश्य का यही पता चलता है कि रमज़ान का उद्देश्य केवल भूखा-प्यासा रहना नहीं है, बल्कि हर मुसलमान को इस पवित्र महीने में यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि वह इस महीने में अपनी ज़ुबान, आंख, कान, हाथ-पांव और दिल को हर तरह की बुराइयों से सुरक्षित रखे और हर तरह की बुराइयों से पूरी तरह बचते हुए पूरे साल के लिए अपने आपको तैयार करे । इस एक महीने के रोज़ों और इसमें की जाने वाली इबादतों को आप पूरे साल गुनाहों से दूर रहने का प्रशिक्षण सत्र भी कह सकते हैं । रमज़ान के दिनों में रोज़े और रातों में तरावीह (रमज़ान की रातों में अदा की जाने वाली लंबी नमाज़) का आयोजन करना ही मूल रूप से किस पवित्र महीने का अधिकार है । यह वह पवित्र महीना है, जिसमें अल्लाह की रहमत बारिश की तरह बरसती है । इस पवित्र महीने में अल्लाह अपने बंदों के गुनाह माफ़ करते हैं और माफ़ी मांगने के लिए रमज़ानुल मुबारक से बेहतर कोई और ज़माना नहीं है । अत: वह व्यक्ति बहुत बदक़िस्मत है, जिसे रमज़ान का महीना मिला और उसने अपनी मग़फ़िरत न करवा ली । सभी इबादतों में से रोज़ा को यह विशेषता प्राप्त है कि उसका बदला अल्लाह ने अपने साथ विशेष किया है । बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत है, जिसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने फ़रमाया रोज़ा मेरे लिए है और मैं ख़ुद ही उसका बदला हूं । एक और हदीस में अल्लाह के नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया कि बर्बाद हो गया वह व्यक्ति जिस पर रमज़ान आया और गुज़र गया और उसने इसमें अपनी मग़फ़िरत न करायी ।

एक और हदीस में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) कहते हैं कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाए कि रमज़ान का क्या चीज़ है तो मेरी उम्मत यह अभिलाषा करे कि पूरा वर्ष रमज़ान ही हो जाए । रमज़ान के रोज़े की विशेषता बहुत अधिक है इनमें किसी प्रकार की कोताही करना वंचित होने जैसा है । गर्मी, कठिनाई, परेशानियां भी हों तो उसे हिम्मत करके बर्दाश्त करना चाहिए । एक हदीस का अर्थ है रोज़े रखो, उसका विकल्प नहीं हो सकता । उलमा की इस बात पर सहमति है कि अगर किसी शरई मजबूरी के कारण रमज़ान का रोज़ा छूट गया तो एक रोज़ा के बदले एक रोज़ा रखने से उसकी पूर्ति हो जाएगी । अगर रोज़ा रखकर तोड़ दिया तो क़ज़ा के एक रोज़े के अलावा दो महीने के रोज़े कफ़्फ़ारा के अदा करने से फ़र्ज़ पूरा हो जाएगा, लेकिन वह बरकत और फ़ज़ीलत जो रमज़ानुल मुबारक की है वह कभी हाथ नहीं आ सकती ।

एक हदीस में है कि एक अवसर पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने शाबान (रमज़ान से पहले वाला अरबी महीना) के आख़िरी दिनों में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है, उसमें एक रात है शबे क़द्र, जो हज़ार महीनों से बढ़कर है । अल्लाह ने उस महीने के रोज़े को तुम पर फ़र्ज़ किया है और उसकी रातों के क़ियाम यानी तरावीह की नमाज़ को सवाब की चीज़ बनाया है । इस महीने में नेकियों का इनाम कई गुना बढ़ा दिया जाता है ।

इस महीने में किसी फ़र्ज़ को अदा करना ऐसा है जैसा कि रमज़ान के अलावा के दिनों में 70 फ़र्ज़ अदा करना । यह महीना सब्र (धैर्य) का है और धैर्य का बदला जन्नत है । यह महीना लोगों के साथ उनके दुख बांटने का है । इस महीने में लोगों की रोज़ी बढ़ा दी जाती है । जो व्यक्ति किसी रोज़ा रखने वाले को इफ़्तार कराए उसके लिए गुनाहों के माफ़ होने और आग से बचाव का वादा है । साथ ही रोज़ा रखने वाले के सवाब के समान इफ़्तार कराने वाले को भी सवाब मिलेगा, मगर उस रोज़ा रखने वाले के अपने सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जाएगा । सहाबियों के पूछने पर नबी (सल्ल॰) ने बताया कि इफ़्तार का मतलब पेट भर कर खाना खिलाना ही नहीं है, अल्लाह तो यह सवाब एक खजूर के खिलाने और लस्सी पिलानी पर भी दे देता है ।

रमज़ान दूसरे लोगों के दुख-दर्द को देखने और उसे महसूस करने का महीना है । इसमें लोगों की मदद करने का सवाब भी बाक़ी दिनों की तुलना में 70 गुना या उससे भी अधिक बढ़ जाता है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) इस महीने में ग़रीबों और अभावग्रस्त लोगों की दिल खोलकर मदद करते थे । वास्तविकता यह है कि यह महीना मानवता की भलाई का महीना है, परस्पर सहयोग और सहअस्तित्व का महीना है । इस महीने का मूल पैग़ाम यह है कि आदमी आदमी के काम आए और उसकी मदद करे । यह मदद किसी तरह की भी हो सकती है, हम किसी की आर्थिक सहायता कर सकते हैं और अगर आर्थिक सहायता करना हमारे वश में न हो तो हम उसकी दूसरी तरह की सहायता कर सकते हैं, जिससे उसका कुछ भला हो सके । उसके साथ अच्छा व्यवहार करके, उसे प्रसन्न कर सकते हैं । दरअस्ल यह महीना मानव मित्रता और मानव समानता के सिद्धांत को लागू करने का महीना है । हमें अपने आसपास रहने वाले ग़रीब लोगों की हर संभव सहायता करनी चाहिए ।

रमज़ान के रोज़ों के मानव शरीर पर प्रभाव

■ ऐमन ख़्वाजा

हर साल करोड़ों मुसलमान सहरी से लेकर सूर्य के ढलने तक रोज़ा रखते हैं । हाल के वर्षों में दुनिया के उत्तरी गोलार्ध में रमज़ान गर्मियों के मौसम में आता है । जब दुनिया के कई क्षेत्रों में गर्मी पड़ती है और दिन लंबे होते हैं । नार्वे जैसे उत्तरी देशों में तो रोज़ा 20 घंटे से भी ज़्यादा लंबे हो सकते हैं । ऐसे में सवाल पैदा होता है कि क्या यह स्वास्थ्य के लिए उचित है ? और अगर लगातार 30 दिनों तक ऐसा किया जाए तो शरीर पर इसके क्या प्रभाव पड़ सकते हैं ?

तकनीकी तौर पर मानव शरीर रोज़ा शुरू करने के 8 घंटे तक सामान्य स्थिति में रहता है । यह वह समय है जब आमाशय में पड़े खाद्य पदार्थों की पाचन क्रिया पूरी हो जाती है । इसके बाद शरीर लिवर और मांसपेशियों में भंडार किये हुए ग्लूकोज (शर्करा) का उपयोग करना शुरू कर देता है। जब यह भंडार भी ख़त्म हो जाता है तो फिर शरीर चर्बी को पिघलाकर ऊर्जा के लिए प्रयोग करता है ।

रमज़ान के पहले दो दिन सबसे कठिन होते हैं । शरीर में भंडार की हुई चर्बी को खाद्य पदार्थ के रूप में प्रयोग करने से वज़न घटना शुरू हो जाता है । कोलेस्ट्रोल की मात्रा में कमी आ जाती है और मधुमेह का ख़तरा कम हो जाता है । लेकिन इसके साथ ही शरीर में शर्करा कम होने से



कमज़ोरी और थकान का एहसास शुरू हो जाता है । इसके अलावा सर दर्द, सर चकराना मितली और सांस से बदबू जैसी समस्याएं भी हो सकती हैं । यह वह समय है जब भूख बहुत तेज़ लगनी शुरू होती है ।

रमज़ान में तीसरे दिन से पांचवें दिन तक पानी की कमी महसूस होती है । जब शरीर रोज़े का आदी हो जाता है तो चर्बी को पिघलाकर उससे शर्करा बनाना शुरू कर देता है । इसके लिए इफ़्तार के बाद पानी अधिक मात्रा में पीना चाहिए । क्योंकि रोज़े की हालत में पसीना आने से शरीर में पानी की कमी अर्थात डिहाइड्रेशन हो सकता है । इस दौरान खाने में अधिक ऊर्जा देने वाली खाद्य-पदार्थ लेना चाहिए । जैसे कार्बोहाइड्रेट और वसा । यह ज़रूरी है कि भोजन संतुलित रहे और उसमें मांस, नमक और पानी का संतुलन हो ।

तीसरे चरण में, यानी एक सप्ताह बीत जाने के बाद शरीर को रोजा रखने की आदत पड़ जाती है और फिर मूड ठीक रहने लगता है । डॉक्टर ज़र्रीं मारूफ़ कैंब्रिज में एनिस्थीसिया और इंटेंसिव केयर मेडिसिन के विभाग से जुड़े हैं, वे कहते हैं कि रोज़ा रखने के इसके अलावा और भी फ़ायदे हैं । सामान्य जीवन में हम प्रतिदिन आवश्यकता से अधिक कैलोरी का प्रयोग करते हैं जिससे शरीर की दूसरी ज़रूरी क्रियाएं, जैसे अपनी मरम्मत करने के लिए उचित समय नहीं मिल पाता । रमज़ान में यह समस्या हल हो जाती है और शरीर अपना ध्यान दूसरी क्रियाओं की ओर केंद्रित कर पाता है । इसलिए रोज़ा शरीर को कमज़ोर होने से बचाता है और कीटाणुओं का मुक़ाबला करने में मदद देता है ।

रमज़ान के आख़िरी दिनों में शरीर भूखे रहने से का पूरी तरह आदी हो जाता है और पूरा सिस्टम उसके अनुकूल हो जाता है । बड़ी आंत, लिवर, गुर्दे और त्वचा इस दौरान विष का उत्सर्जन करने की प्रक्रिया (डिटॉक्सिफिकेशन) शुरू कर देते हैं । डॉक्टर मारूफ़ कहते हैं कि इस दौरान अंगों की प्रक्रिया पूरी शक्ति से चलने लगती है । इससे व्यक्ति की याद्दाश्त बेहतर हो जाती है और उसके अंदर ज़्यादा ऊर्जा आ जाती है ।

अगर भूखे रहना कई दिन तक लगातार जारी रहे तो शरीर चर्बी को पिघलाना शुरू कर देता है, लेकिन रमज़ान में ऐसा नहीं होता, क्योंकि रोज़ा एक दिन में पूरा हो जाता है । तो क्या रोज़ा स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है ?

डॉक्टर मारूफ़ कहते हैं, जी हां ! मगर एक शर्त के साथ । यह आवश्यक है कि भोजन संतुलित हो और उसमें मांस, नमक और पानी की आवश्यक मात्रा शामिल हो ।

रोज़ा स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, क्योंकि इससे हमें इस बात पर ग़ौर करने का अवसर मिलता है कि क्या खाना है और कब खाना है । अलबत्ता मैं किसी को यह सुझाव नहीं दे सकता कि एक महीने से ज़्यादा समय तक रोज़े रखे । वे कहते हैं कि लगातार रोज़ा वज़न कम करने के लिए अच्छी चीज़ नहीं, क्योंकि अंतत: व्यक्ति का शरीर चर्बी को ऊर्जा में बदलने के बजाय पुट्ठों की ओर केंद्रित हो जाता है । यह स्वास्थ्य के लिए अच्छी बात नहीं है और इसका मतलब है कि व्यक्ति का शरीर भूखे रहने की हालत में चला गया है । उनका कहना है कि रमज़ान के रोज़े अगर सही ढंग से रखे जाएं तो हर रोज़ शरीर की ऊर्जा बहाल हो जाती है जिससे व्यक्ति का वज़न भी संतुलन में रहता है और शरीर में चुस्ती फुर्ती भी रहती है ।

25 yrs. Service (Regd.)
AL KAUSAR HOLY HERBAL
HOSPITAL & RESERCH CENTRE
(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)
Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**
Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)
Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India
Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)
Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days
(Rooms available)
Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

"अल्लाह ईमान वालों से ख़ुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे। उनके दिलों का हाल उसको मालूम था इसलिए उसने उनपर सकीनत (शांति) उतारी, उनको इनाम में क़रीब की विजय प्रदान की, और बहुत-सा ग़नीमत का माल उन्हें प्रदान कर दिया जिसे वे (जल्द ही) प्राप्त करेंगे। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।"

(क़ुरआन, 48:18-19)

A Well Wisher

MUZAFFARPUR

लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका

क्या चौथा स्तंभ ही इसकी जड़ें खोद रहा है ?

■ मुशर्रफ़ अली

लोकतंत्र को पूरे विश्व में स्थापित करने के लिए मीडिया ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है । 18वीं शताब्दी के बाद से, विशेष रूप से अमेरिकी स्वतंत्रता आंदोलन और फ़्रांसीसी क्रांति के समय से, मीडिया जनता तक पहुंचने और ज्ञान के साथ उन्हें सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है । लोकतांत्रिक देशों में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के काम-काज पर नज़र रखने के लिए मीडिया को 'चौथे स्तंभ' के रूप में जाना जाता है ।



लेकिन आज हमारे देश में मीडिया ने अपनी गरिमा मिट्टी में मिला ली है । लोकतंत्र के निर्माण और स्थायित्व में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाने के बजाय आज देश का मीडिया लोकतंत्र ही की जड़ें खोदने में लगा हुआ है । कुछ गिने-चुने पत्रकारों को छोड़कर आमतौर से मीडिया देश में एक नकारात्मक भाव पैदा करने में लगा हुआ है । एक विशेष सांप्रदायिक मानसिकता के निर्माण के लिए मीडिया घटियापन के सबसे निचले स्तर पर उतर चुका है । सच को दबाना और झूठ को प्रचारित करना ही मीडिया का मुख्य दायित्व बन गया है ।

सरकार और कार्पोरेट के हितों की रक्षा के लिए मीडिया ने देशवासियों के हितों की आहुति दे दी है । मीडिया वही बोलता और वही दिखाता है, जो सरकार चाहती है या जिसमें उस मीडिया हाउस का हित है । जनसामान्य से जुड़े मुद्दे न केवल यह कि नहीं दिखाये जाते हैं, बल्कि उन्हें दबाया जाता है । झूठे और मनगढ़ंत आंकड़े पेश करके सच्चाई को ज़ोरदार ढंग से दबाया जाता है ।

बेरोज़गारी आज देश की सबसे बड़ी समस्या है और इसके कारण अपराध भी बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं । लोग महंगाई से बेहाल हैं । किसान और खेतिहर मज़दूर त्रस्त हैं और आत्महत्या करने पर मजबूर हैं । इस तरह की दूसरी बहुत-सी समस्याएं हैं, जिन्होंने जनसामान्य का जीना मुश्किल कर रखा है । लेकिन ये बातें न अख़बारों में आती हैं और न कोई टी॰वी॰ चैनल इन्हें दिखाता है । यहां तक कि इंटरनेट पर भी इसके आंकड़े तलाश करने पर नहीं मिलते हैं । इनके बजाय देश को बांटने वाली और सांप्रदायिकता भड़काने वाली झूठी ख़बरें दिखायी जाती हैं । ज़हर उगलने वाले नेताओं को चैनलों पर बुलाकर बहस करायी जाती है, जो कई बार गाली-गलौज से आगे बढ़कर हिंसक भी हो जाते हैं ।

1975 ई॰ में आपातकाल के समय प्रेस सेंसरशिप के

दिनों से लेकर 2014 के लोकसभा चुनावों तक भारतीय लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका में प्रभावशाली रूप से बदलाव आया है । भारतीय मीडिया ने अख़बार और रेडियो के दिनों से लेकर वर्तमान युग में टेलीविज़न और सोशल मीडिया तक एक लंबा सफ़र तय किया है । 1990 के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण से मीडिया हाऊसों पर निवेश का असर पड़ा, क्योंकि कॉर्पोरेट के बड़े घरानों, व्यापार जगत, राजनीतिक अभिजात वर्ग और उद्योगपतियों ने अपनी ब्रांड छवि को बेहतर बनाने के लिए इसे एक सुविधा के रूप में प्रयोग किया है।

पहले समाचार मुद्दों के बारे में जानकारी लेने के लिए पढ़े जाते थे, अब वे पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण का स्रोत बन गये हैं । मीडिया की भूमिका समाज को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों से अवगत कराने के लिए है । जब सरकारी संस्थान भ्रष्ट और सत्तावादी हो जाते हैं और जब वे समाज से संबंधित मुद्दों की लगातार अनदेखी करने लगते हैं, तब मीडिया लाखों नागरिकों की आवाज़ बनकर उठाता है, लेकिन मीडिया विभिन्न राजनीतिक संगठनों और व्यापार समूहों के लिए मुखपत्र बन गया है ।

देश में मीडिया की विश्वसनीयता तेज़ी से नष्ट हो रही है । विश्व दर्शकों द्वारा देश के मीडिया की सनसनीख़ेज ख़बरें फैलाने के लिए समय-समय पर आलोचना की गयी है । भारतीय मीडिया जिस तरह से ख़बरों का इस्तेमाल करता है और जिस तरह से जानकारियों को घुमा-फिरा कर दिखाता है, उसने वर्ल्ड प्रेस फ्रीडम इंडेक्स (विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक) में देश को तीन पायदान नीचे खिसका दिया है । इसके अलावा फेक न्यूज़ के मामले में भारतीय मीडिया सबसे अगली पंक्ति में है ।

2019 के चुनाव अब सर पर हैं । गत पांच साल में मीडिया की विश्वसनीयता को निम्नतर स्तर तक पहुंचा दिया गया है । मीडिया ने इन पांच सालों में जनता को बेदख़ल कर दिया है, उसकी आवाज़ को कुचल दिया है । टी॰वी॰ की बहस में हर उस आवाज़ की हत्या होती है जो जनता की ओर से उठायी जाती है । आज सबसे अधिक झूठ मीडिया द्वारा ही बोला जा रहा है । न्यूज़ चैनल अब जनता के हथियार नहीं हैं, सरकार के हथियार हैं । सरकार के दावों को ज़मीन से जांचने वाले पत्रकार समाप्त हो चुके हैं । जनता झूठ की आंधियों में घिर गयी है ।

चुनावी साल में मीडिया पर चर्चा करते हुए जाने-माने पत्रकार रवीश कुमार बहुत दुखी होकर लिखते हैं–"इस चुनाव में नेता आपको धर्म की रक्षा के लिए उकसाएंगे । हिन्दू मुस्लिम डिबेट चरम पर होगा । इस डिबेट का एक ही मक़सद है । बड़ी संख्या में युवाओं को दंगाई बनाना । दंगों के प्रति सहनशील पैदा करना । उनके मां-बाप की मौन सहमति इन युवाओं को ऊर्जा देगी । भारत एक नये दौर में जा रहा है ।

हत्याओं के प्रति सहनशील भारत । बलात्कार के प्रति सहनशील भारत । बस उसकी सहनशीलता तभी खौलेगी जब अपराधी का धर्म अलग होगा । बलात्कार और हत्या की शिकार का धर्म अलग हो तो कोई बात नहीं । धर्म से नहीं बहकेंगे तो पाकिस्तान के नाम पर बहकाया जाएगा । भारत में सांप्रदायिकता पारिवारिक हो चुकी है । मां-बाप और बच्चे खाने की मेज पर सांप्रदायिकता से सहमति जताते हैं । नफ़रत सामाजिक हो चुकी है । इसी की जीत का साल होगा 2019 ।"

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

का हिन्दी प्रकाशन

तफ़सीर

शम्स पीरज़ादा (रह॰)

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द-1

(पारा 1 से पारा 10 तक) सूरह फ़ातिहा ता सूरह तौबा ₹350/-

जिल्द-2

(पारा 11 से पारा 20 तक) सूरह यूनुस ता सूरह अनकबूत ₹350/-

जिल्द-3

(पारा 21 से पारा 30 तक) सूरह रूम ता सूरह नास ₹480/-

- मौज़ूअ और ज़ईफ़ हदीसों का चलन 9/-
- क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना ज़रूरी नहीं? 10/-
- तलाक़ कब और कैसे? 6/-
- सुनो अपने रब (पालनहार) की 18/-
- पारा अम्म 120/-

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन

59-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-400003

फ़ोन : 23465005

सत्रहवीं लोकसभा की दहलीज पर कितना परिपक्व हुआ हमारा लोकतंत्र ?

■ जुनैद अली

भारत संसार का सबसे वृद्ध जनतंत्र होने के साथ-साथ समृद्ध लोकतांत्रिक व्यवस्था है, जिसमें धार्मिक, जातिगत, क्षेत्रीय, भाषाई व आर्थिक विषमताओं की विस्तृत शृंखला विद्यमान हैं, इन विविधताओं को लोकतंत्र के माध्यम से एकसूत्र में पिरोने के आधार पर ही भारतीय लोकतंत्र को संसार के सभी लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं पर श्रेष्ठता प्राप्त है । सही मायनों में लोकतंत्र की स्थापना देश की आज़ादी के पूर्व से ही संयुक्त रूप से जारी सतत संघर्ष का परिणाम है, जिसमें सभी वर्ग के लोगों ने धार्मिक, जातिगत, क्षेत्रीय एवं आर्थिक आधारों को तिलांजलि देते हुए सम्मिलित भाव से अनथक प्रयास सुनिश्चित किये । मुख्य रूप से संघर्षरत लोगों की परिकल्पनाओं में एक ऐसी स्वर्णिम भारत की छवि थी जिसमें समस्त देशवासियों के लिए किसी भी प्रकार के भेदभाव को दरकिनार करते हुए सभी के लिए समानता व संपन्नता के अधिकार सुरक्षित किये जाएंगे और इन्हीं आधारों पर सकल विकास की धारणा लोकतांत्रिक व्यवस्था का मुख्य घटक निश्चित किया गया ।



मूल रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के चार मुख्य स्तंभ विधिपालिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका व पत्रकारिता होते हैं जो आपसी संवाद एवं समन्वय से लोकतांत्रिक परिधि में संचालित होने वाली समस्त गतिविधियों को नियंत्रित व विनियमित करते हुए सतत् विकास की अवधारणा को स्थापित करने का प्रयास करते हैं, ताकि जनाकांक्षाओं की पूर्ति उसके मूल स्वरूपों के साथ की जा सके । तानाशाही में जहां निरंकुशता का बोलबाला रहता है, वहीं लोकतंत्र में जनहित व जनता का दख़ल सर्वोपरि रहता है । इसी आधार पर जनता विधायिका का चुनाव कर उन्हें निश्चित समय के लिए व्यवस्था की बागडोर सौंपती है, ताकि जनप्रतिनिधि तंत्र को गतिशील बनाते हुए सकारात्मक निष्कर्षों को प्राप्त कर सकें, इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्राप्त निष्कर्षों की अनुकूलता मुख्य रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के स्तंभों पर निर्भर करती है ।

देश की लगभग सत्तर वर्षों की लोकतांत्रिक व्यवस्था का विश्लेषण किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मंद अथवा तेज़ लेकिन अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद भारत अपने लोकतांत्रिक छवि को सहेजने में सफल रहा है । परंतु आपातकाल, इंदिरा गांधी हत्या पश्चात सिख विरोधी दंगे, बाबरी विध्वंस, गुजरात नरसंहार, निरंतर अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न, जातिगत संकीर्णताएं, नक्सलवाद व कश्मीरी अवाम से उचित संबंध स्थापित न हो पाना कहीं न कहीं भारतीय लोकतांत्रिक छवि पर आघात करता हुआ प्रतीत होता है । यह अत्यंत खेदजनक पक्ष रहा है कि 1980 के दशक से इस देश की राजनीति में ऊपरी सतह पर उभरते हुए धार्मिक ध्रुवीकरण व संकीर्ण जातिगत समीकरण ने समूचे सामाजिक ताने-बाने को बिखेर कर रख दिया । धार्मिक एवं जातिगत उन्माद अपने चरम की ओर अग्रसर है, जिसके आधार पर मॉब लिंचिंग जैसे जघन्य अपराधों में निरंतर बढ़ोत्तरी हो रही है । राष्ट्रीय स्तर के

अधिकांशत: राजनीतिक दल जनकल्याण के मुद्दों से विचलित होते हुए धार्मिक एवं जातिगत मुद्दों पर अपना भविष्य तलाश करते हैं ।

यह दुखद है कि राजनीतिक दल धर्मनिरपेक्ष देश भारत को धार्मिक ध्रुवीकरण का देश बनाने पर तुले हुए हैं । नफ़रत से जुड़े अपराधों में बढ़ोत्तरी हो रही है, जबकि लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को आम जनमानस के दृष्टिकोण से देखा जाए तो जन हितैषी कार्ययोजनाओं व मूलभूत सुविधाओं में बढ़ोत्तरी हुई है और किसी न किसी रूप में देश की जनता में जागरूकता का प्रसार हुआ है । परंतु वास्तविक अधिकारों के संरक्षण की बात की जाए तो उसमें अभी भी भारी विषमताएं विद्यमान हैं, जो जनता को अधिकारों से वंचित किये हुए हैं । देश में प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संपदाओं, संसाधनों व उपजाऊ कृषि भूमि होने के बावजूद कृषि प्रधान देश में भुखमरी एवं ग़रीबी का उन्मूलन नहीं हो सका । स्वास्थ्य, शिक्षा एवं मूलभूत सुविधाओं का प्रबंधन आज़ादी के 70 वर्षों बाद भी बड़ा मुद्दा है । इंदिरा की ग़रीबी हटाओ के नारे एवं भाजपा के सुशासन व अच्छे दिन के नारे महज चुनावी घोषणा पत्र तक ही सिमट कर रह गये ।

मूल रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था के चार मुख्य स्तंभ विधिपालिका, न्यायपालिका, कार्यपालिका व पत्रकारिता होते हैं जो आपसी संवाद एवं समन्वय से लोकतांत्रिक परिधि में संचालित होने वाली समस्त गतिविधियों को नियंत्रित व विनियमित करते हुए सतत् विकास की अवधारणा को स्थापित करने का प्रयास करते हैं, ताकि जनाकांक्षाओं की पूर्ति उसके मूल स्वरूपों के साथ की जा सके । तानाशाही में जहां निरंकुशता का बोलबाला रहता है, वहीं लोकतंत्र में जनहित व जनता का दख़ल सर्वोपरि रहता है ।

राष्ट्रीय स्तर की लगभग सभी सियासी पार्टियां लोकतांत्रिक व्यवस्था की बनिस्बत पार्टी हित को प्राथमिकताओं में रखते हुए उसी के प्रति समर्पित नज़र आतीं रही हैं । सत्ता लोभियों ने जवाबदेही के प्रति संवेदनशीलता के विपरीत साम, दाम, दंड व भेद के सहारे सत्ता हथियाने की कला को कहीं अधिक उपयुक्त समझा और अवसर दोहन के लिए किसी भी सीमा को लांघने में संकोच नहीं किया । अनैतिक राजनीतिज्ञों से समूचा देश बेहाल है जिसने भारत को विकसित होने नहीं दिया, बल्कि भुखमरी, अशिक्षा एवं ग़रीबी के ग्राफ़ को निरंतर आरोही क्रम में बनाए रखा । भुखमरी के संदर्भ में असहज स्थिति का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि झारखंड की कोयला देवी का प्रकरण जिसमें एक मासूम बच्ची भूख से भात-भात कहते प्राण त्याग देती है, अंतर्राष्ट्रीय जगत पर भुखमरी व ग़रीबी के संदर्भ में भारत की छवि अत्यंत दुर्बल है ।

यदि ग्लोबल हंगर इंडेक्स पर नजर दौड़ाएं तो भारत 119 देशों की सूची में 103वें पायदान पर खड़ा हुआ है । यदि वैश्विक सूचकांक में भारत में भुखमरी को सांख्यिकी आधार पर समझने का प्रयास करें तो 2014 ई॰ में जहां भारत 55वें पायदान पर था वहीं 2018 में उसकी स्थिति गोता लगाते हुए नेपाल, बंगलादेश व श्रीलंका से पिछड़ते हुए 103वें पायदान पर पहुंच गयी ।

भारत युवाओं का देश है और यही इसकी शक्ति है, किंतु बेरोज़गारी व भविष्य में स्पष्टता न हो पाने के कारणवश युवाओं में निराशा एवं अवसाद के लक्षण साफ़ तौर से देखें जा सकते हैं जो चिंतनीय होने के साथ-साथ यह साबित करता है कि विधायिका ठोस नीतियों व कारगर उपायों के सृजन एवं क्रियान्वयन के प्रति उदासीन व असफल रही है ।

जनतंत्र में न्यायपालिका की भूमिका कहीं अधिक बड़ी व गंभीर होती है जिसका मुख्य कार्य सबको समान न्याय सुनिश्चित कराना होता है । शक्तियों के पृथक्करण के सिद्धांत के अनुरूप न्यायपालिका कोई भी नियम नहीं बनाती है और न ही क़ानून का क्रियान्वयन करती है । शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धांत फ्रेंच दार्शनिक मांटेस्क्यू ने दिया था । उसके अनुसार राज्य की शक्ति उसके तीन भागों कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका में बांट देनी चाहिए । यह सिद्धांत राज्य को सर्वाधिकारवादी होने से बचा सकता है तथा व्यक्ति

की स्वतंत्रता की रक्षा करता है ।

अमेरिका का संविधान पहला ऐसा संविधान था जिसमें यह सिद्धांत अपनाया गया था । इन सभी बातों के मध्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में लंबित प्रकरणों का भारी बोझ न्यायपालिका की छवि पर ग्रहण लगाता हुआ प्रतीत होता है । विलंब से प्राप्त परिणामों में न्यायिक पक्षों में धुंधलापन का आभास होता है, जो न्यायिक मापदंडों को पूर्णत: परिभाषित करने में लक्ष्य से भटकाता हुआ प्रतीत होता है । सही मायनों में विलंब से प्राप्त न्याय जनता के विश्वास को संतृप्त करने में अयोग्य दिखायी पड़ता है । कुछ मामले ऐसे भी रहे हैं जिसमें कार्यपालिका व न्यायपालिका में तालमेल का ख़ासा अभाव रहा जिसका नतीजा सीमाओं के उल्लंघनों एवं एक-दूसरे के हस्तक्षेप के रूप में सामने आते रहे हैं । यह लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रभावित करता हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

वैश्वीकरण के पश्चात भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था का विश्लेषण किया जाए तो व्यवस्था के उभरते प्रतिबिंब के अनुसार लोकतंत्र पर अर्थतंत्र हावी होता हुआ प्रतीत होता है । देश का समूचा आर्थिक तंत्र मात्र गिनती के लोगों में सिमटकर रह गया है । आक्सफैम की रिपोर्ट में बताया गया है कि साल 2018 में देश के शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों की संपत्ति में 39 फ़ीसदी की वृद्धि हुई, जबकि 50 प्रतिशत ग़रीब आबादी की संपत्ति में महज़ 3 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी, भारत की शीर्ष 10 प्रतिशत आबादी के पास देश की कुल संपत्ति का 77.4 प्रतिशत हिस्सा है । इनमें से सिर्फ़ एक ही प्रतिशत आबादी के पास देश की कुल संपत्ति का 51.53 प्रतिशत, क़रीब 60 प्रतिशत आबादी के पास देश की सिर्फ़ 4.8 प्रतिशत संपत्ति है । देश के शीर्ष 9 अमीरों की संपत्ति 50 प्रतिशत ग़रीब आबादी की संपत्ति के बराबर है । भारत में रहने वाले 13.6 करोड़ लोग साल 2004 से क़र्ज़दार बने हुए हैं । देश का किसान ऋण तले इस क़दर दबा हुआ है कि आत्महत्या तक के लिए विवश हो चुका है । यह देश की सबसे ग़रीब 10 प्रतिशत आबादी है ।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि असमान आर्थिक विकास दर निश्चित रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रभावित करेगा, धनाढ्य एवं निशक्तों के बीच बढ़ती खाई के मध्य आदर्श लोकतांत्रिक व्यवस्था का संचालन कर पाना अत्यंत कठिन है, बेलगाम भ्रष्टाचार व्यवस्था के सभी खंडों में मौजूद हैं, छोटे-बड़े भ्रष्टाचार मामलों की लंबी फ़ेहरिस्त है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मुख्य रूप से कोल ब्लॉक, टू-जी, कॉमन वेल्थ एवं रक्षा क्षेत्रों में बोफ़ोर्स से लेकर रफाल विमानों तक इसकी गूंज हैं, रक्षा उपकरण सौदों की दलाली पर सरकारें अवश्य बदलीं परंतु अभी तक किसी बड़े प्रकरण में अपराध साबित नहीं हो सका, आय करदाताओं की गाढ़ी कमाई को बिचौलियों ने सुनियोजित तरीक़े से निगल लिया जिसका परिणाम यह हुआ कि विकास की धारा जो निचले क्रम तक प्रवाहित होना चाहिए था वह सीमित होकर रह गया, लोकपाल को लेकर अस्पष्टता है जिसका आशय यही है कि सरकारें किसी राज्य अथवा केन्द्र की हों भ्रष्टाचार के संदर्भ में गंभीर नहीं है ।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देश की आधी आवादी अर्थात महिलाओं की स्थितियों का विवेचना करें तो यह किसी भी रूप में सुदृढ़ दिखायी नहीं पड़ती है, महिला उत्थान एवं महिला सशक्तिकरण की वातें ज़ोर-शोर से उठाया गया किंतु स्थितियों में परिवर्तन लगभग सिरे से ग़ायब रही, पुरुषों में साक्षरता दर जहां 85 प्रतिशत है वहीं महिला साक्षरता दर 65 प्रतिशत है जो महिलाओं को मुख्यधारा से वाहर करता हुआ दृष्टिगोचर होता है ।

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा लगभग निरंतर आरोही क्रम में रहें हैं, नेशनल क्राइम ब्यूरो की रिपोर्ट के अनुसार 2015 की तुलना में 2016 में बलात्कार के मामलों में 12.4 फ़ीसदी वृद्धि हुई है, 2016 में 38147 मामले दर्ज किये गये, सबसे ज़्यादा बलात्कार के मामले 4882 मध्य प्रदेश में दर्ज किये गये, दूसरे नम्बर पर 4816 बलात्कार की घटनाओं के साथ उत्तर प्रदेश है, वहीं तीसरे स्थान पर 4189 मामलों के साथ महाराष्ट्र है, दिल्ली को एन॰सी॰आर॰बी॰ द्वारा किये गये सालाना सर्वेक्षण में महिलाओं के लिए सबसे असुरक्षित शहर बताया गया, इसी के साथ महिला उत्पीड़न एवं घरेलू हिंसा का लंबा सिलसिला है ।

यह अत्यंत खेदजनक पक्ष रहा है कि महिलाओं के अधिकारों के प्रति देश की कोई भी सियासी दल बहुत गंभीर नहीं है । यहां तक कि महिला प्रतिनिधियों ने भी इसे वरियता क्रम में नहीं रखा जिसका परिणाम यह हुआ कि संसद में महिला आरक्षण विधेयक दो दशक से अधिक समय से लंबित है, दलित महिलाओं की स्थिति अन्य के मुक़ाबले अत्यधिक दयनीय है । तीन तलाक़ के मुद्दे पर

मुस्लिम महिलाओं की मूल भावनाओं को दरकिनार करते हुए उनकी घोर उपेक्षा की गयी है । इन स्थितियों के मध्य गंभीर प्रश्न यह है कि जब आधी आबादी उपेक्षित है तब ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र को कैसे प्रगाढ़ता प्रदान किया जा सकता है ? बल्कि यह स्थिति एक बड़ी चुनौती के रूप में देश के सामने है ।

लोकतांत्रिक परिधि में पत्रकारिता जनता की सजग प्रहरी होने के साथ-साथ जन जिज्ञासाओं के अभिव्यक्ति का माध्यम है किंतु लोकतांत्रिक व्यवस्था का यह चौथा स्तंभ पूंजीवाद की भेंट चढ़ते हुए जर्जर स्थिति में पहुंच चुका है, स्थिति इतनी नकारात्मक हो चली है कि पत्रकारिता की विश्वसनीयता अब लाल घेरे में नज़र आती हैं, पत्रकारिता संस्थान जनता का पक्षधर होने के स्थान पर रसूख़दारों, पूंजीपतियों व सत्ता पक्षों के आगे नतमस्तक है, वास्तविक रूप से मीडिया समाज का दर्पण होता है जो विषम परिस्थितियों में भी सत्यता को उजागर करते हुए जागरूकता का प्रसार करते हैं परंतु यह भावनाएं केन्द्र से ओझल होती जा रही है और इसके स्थान पर पेड न्यूज़ व टी०आर०पी० बढ़ाने की होड़ में सम्मिलित पत्रकारों समूहों द्वारा निजी स्वार्थों की पूर्ति हेतु असत्य व बनावटी समाचारों के तहत जनता के आंखों में धूल झोंका जा रहा है ।

इन सब बातों का यह अभिप्राय बिल्कुल भी नहीं है कि सभी भारतीय पत्रकार भ्रष्ट हैं, बल्कि कम ही सही लेकिन गौरी लंकेश एवं क्राइम रिपोर्टर सुदीप दत्ता भौमिक जैसे कई ईमानदार व निर्भिक पत्रकार भी हैं जिन्होंने अपने कर्तव्य को वरियता क्रम में रखते हुए जीवन को दांव पर लगा दिया, पत्रकारों की सुरक्षा पर नज़र रखने वाली संस्था रिपोर्टर विदआउट बॉर्डर हर साल दुनिया भर के देशों के पत्रकारों की सुरक्षा के आधार पर रैंकिंग जारी करती है । इस रैंकिंग के हिसाब से सबसे ऊपर रहने वाले देश में पत्रकार सबसे ज़्यादा सुरक्षित और सबसे पीछे रहने वाले देशों में पत्रकार सबसे असुरक्षित माने जाते हैं । साल 2017 में भारत इस रैंकिंग में 136वें नम्बर पर था, लेकिन बीते साल भारत का स्थान 133वें नम्बर पर था । सही मायनों में पत्रकारिता की यह स्थिति जनतंत्र को अशक्त करता हुआ प्रतीत होता है ।

यह पूर्णत: स्पष्ट है कि व्यवस्थाओं में परिवर्तन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया और उतार-चढ़ाव इसका अभिन्न अंग है, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय लोकतंत्र को निराशाजनक एवं नकारात्मक कहा जाना वास्तविक रूप से अनुपयुक्त होगा क्योंकि दोनों शब्द किसी भी समस्या का समाधान नहीं है और उत्साहजनक क़रार दिये जाने के ठोस कारकों का अभाव है किंतु सबसे गंभीर प्रश्न यह है कि भारतीय लोकतंत्र को परिपक्व बनाने में लगभग एक अरब तीस करोड़ जनता की भूमिका क्या है ? जबकि लोकतंत्र का पर्व अर्थात चुनाव में सत्ता की समस्त कुंजी जनता के हाथ में होती है परंतु इस संदर्भ में यह अत्यंत खेदजनक स्थिति रही है कि जनता वास्तविक मुद्दों से इतर भावनात्मक एवं संकीर्ण मुद्दों पर कहीं अधिक केन्द्रित रहीं और उसी से प्रेरित होते हुए जनादेश दिए जिसका निष्कर्ष यह निकला कि न्याय, विकास, समानता एवं संपन्नता का स्वप्न अपने मूल स्वरूपों को प्राप्त नहीं कर सका ।

भारत विविधताओं एवं बहुविचारों का देश है इसलिए इसका विकास पथ पर अग्रसर होना तब तक संभव नहीं हो सकता है जब तक इस देश की जनता धार्मिक, जातिगत व क्षेत्रियता की संकीर्ण मानसिकता को छोड़कर सभी समुदायों एवं समूहों में बंधुत्व की भावनाओं, जागरूकता, सत्यता व शिक्षा का प्रसार नहीं करेंगी और सही मायनों में भारत इन्हीं मूल्यवान विचारों के संग लोकतंत्र की परिपक्वता की दिशा में अग्रसर हो सकता है ।

ANSARI STONE KOTA

Deals in :
ALL TYPES OF SAND STONE
(RED, BLUE, BROWN ETC.)

MACHINE CUT & HAND CUT SAND STONE



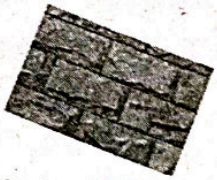

KOTA STONE

Address :
RAM NAGAR NEW STONE MANDI
KOTA RAJASTHAN

Mobile : 9829039190, WhatsApp : 9660853702

क्या न्यूज़ीलैंड की घटना आतंकवाद नहीं ?

■ अंजय तिवारी

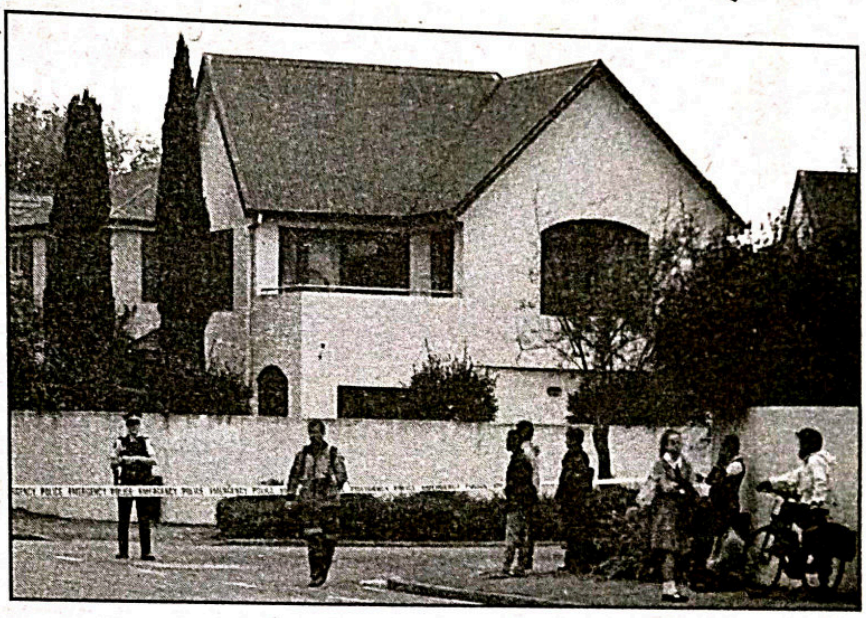

न्यूज़ीलैंड में एक व्यक्ति ने नमाज़ पढ़ते मुसलमानों को गोलियों से भून दिया । तो क्या यह आतंकवादी घटना नहीं है ? हमने आतंकवादी का मतलब मुसलमान बना रखा है । किसी दूसरे धर्म के अनुयायी को आतंकवादी नहीं कहा जाता है ।

न्यूज़ीलैंड की प्रधानमंत्री ने इसे आतंकवादी हमला कहा है और इसे न्यूज़ीलैंड का सबसे काला दिन बताया है । प्रधानमंत्री उसी धर्म की हैं जिसका हमलावर । क्या हम अपने देश में विधर्मियों की क्रूर भीड़ हत्या पर हत्यारों को आतंकवादी कह सकते हैं ? हमलावर अपने को फासिस्ट कहता है । वह हमारे गो-रक्षकों से अधिक स्पष्टवादी है । वह केवल हत्यारा है, झूठा और पाखंडी नहीं ।

नफ़रत उसकी आत्मा में भी समाई है । वह भारत-चीन-तुर्की से आने वालों को हमलावर मानता है । अपने 74 पृष्ठ के घोषणा पत्र में इन देशों से आने वालों को खदेड़ने की बात कहता है । ऐसी संकीर्णता और घृणा जहां पायी जाए, समझ लेना चाहिए कि यह फासीवाद की निशानी है ।

हमारे 'राष्ट्रवादियों' की तरह वह भी दावा करता है कि 2028-2038 के बीच भारत-चीन-तुर्की के हमलावर न्यूज़ीलैंड में बहुसंख्यक हो जाएंगे ! यह नफ़रत वहां भी समाज में बढ़ रही है और डर है कि उसे रोका न गया तो समाज को भीतर से बुरी तरह बांट देगी । हम अपने यहां बढ़ती नफ़रत और विभाजन को देख रहे हैं ।

अन्तर यह है कि न्यूज़ीलैंड में सरकार अभी अपने धर्मावलंबियों की आतंकवादी और फासीवादी कार्रवाई को सही नाम से पुकारती है, उसे आतंकवाद कहने पर देशद्रोह नहीं बताती । लेकिन यह घटना एक बड़ी चेतावनी है । दस वर्षों के भीतर मंडराती दूसरी मंदी के माहौल में जो सामाजिक असुरक्षा बढ़ रही है, उसके कारण उत्तेजना और दिशाहीनता युवाओं को घेरती जा रही है ।

अर्थशास्त्री रघुराम राजन ने चेतावनी दी है कि दुनिया भर में युवाओं के बीच पूंजीवाद के प्रति नाराज़गी बढ़ रही है जो विस्फोटक रूप लेकर बग़ावत में भी बदल सकती है । दिशाहीन युवाओं के असंतोष और क्रोध को पूंजीवाद विरोधी रूप लेने से रोकने की कोई कोशिश आज ताक़तवर वित्त संस्थाएं उठा न रखेंगी ।

असुरक्षा और असंतोष को नफ़रत और हिंसा का रूप देकर पूंजीवाद फासीवाद का पोषण करता है । आज यह प्रक्रिया हमें बहुत से देशों में दिखायी देती है । आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका में भारतवंशियों पर जो हमले होते रहे हैं, वे इसी कड़ी का अंग हैं । अमेरिका में तो ख़ुद अमेरिकी बच्चों पर गोलीबारी की कई घटनाएं हुईं जिनमें अनेक अबोध बच्चे मारे गये । ऐसी छोटी-छोटी घटनाओं की आतंकवादी कड़ियां आज संकटपूर्ण माहौल में गंभीर ख़तरे का रूप ले रही हैं ।

भारत और न्यूज़ीलैंड में एक अंतर है । भारत में सामाजिक घृणा और विभाजन की राजनीति सत्ता में है । न्यूज़ीलैंड में सत्ता अभी आतंकवाद को धर्म से तय नहीं करती । क्या हम अपने देश में भी यह विवेक पुनर्स्थापित करेंगे ?

"जब ज़मीन अपनी पूरी शिद्दत के साथ हिला डाली जाएगी, और ज़मीन अपने अन्दर के सारे बोझ निकालकर बाहर डाल देगी, और इन्सान कहेगा कि यह इसको क्या हो रहा है ? उस दिन वह अपने (ऊपर बीते हुए) हालात बयान करेगी, क्योंकि तेरे रब ने उसे (ऐसा करने का) आदेश दिया होगा ।"

(क़ुरआन, 99:1-5)

A Well Wisher

EAST CHAMPARAN

इस्लाम से नफ़रत करने वाले रिचर्ड बने मुसलमान

■ संपादन प्रभाग

कभी इस्लाम से बेइंतिहा नफ़रत करने वाले रिचर्ड मैकिने ने पिछले दिनों इस्लाम क़बूल कर लिया । वे कभी मस्जिद को बम से उड़ाना चाहते थे, लेकिन उन्होंने धर्म बदल कर खुद ही इस्लाम क़बूल कर लिया । आजतक की वेबसाइट पर दी गयी प्रज्ञा बापजेयी की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ 'दि संडे प्रोजेक्ट' से रिचर्ड मैकिने नाम के इस शख़्स ने इस्लाम अपनाने की अपनी अनोखी कहानी को शेयर किया है ।

रिचर्ड मैकिने इंडियाना के रिटायर्ड मैरीन अफ़सर हैं । घर लौटने के बाद अल्कोहल एडिक्शन से लड़ रहे रिचर्ड के मन में इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत फैल चुकी थी ।

रिचर्ड ने बताया कि एक दिन वे अपनी पत्नी के साथ एक दुकान में पहुंचे और वहां हिजाब में दो मुस्लिम महिलाओं को देखा । बक़ौल रिचर्ड कि मैंने प्रार्थना की कि मुझे इतनी ताक़त मिले कि मैं उनके पास जाऊं और उनकी गर्दन तोड़ दूं, लेकिन उन्होंने ऐसा कुछ नहीं किया, बल्कि इससे भी ज़्यादा ख़तरनाक प्लान बनाया । वह घर में बम बनाने की सोच रहे थे और इस्लामिक सेंटर के बाहर रखकर उसे उड़ाने का ख़्वाब देख रहे थे ।

रिचर्ड ने सोचा था कि वह दूर से बैठकर उस भयानक मंज़र को देखेंगे । रिचर्ड ने बताया कि मेरी 200 से ज़्यादा लोगों को मारने और घायल करने की योजना थी । इस्लाम के प्रति नफ़रत ही मुझे ज़िन्दा रखे हुए थी । इसी बीच रिचर्ड मैकिने ने मुस्लिम समुदाय को एक और मौक़ा देने के बारे में सोचा । वह स्थानीय इस्लामिक सेंटर गये और वहां उन्हें एक क़ुरआन दी गयी । वे उसे घर ले गये और पढ़ने लगे ।

आठ हफ़्तों के बाद वे इस्लाम अपना चुके थे और कुछ सालों बाद वे उसी इस्लामिक सेंटर के अध्यक्ष बन गये जिसे वे कभी बम से उड़ाना चाहते थे । किसी को भी इतने नाटकीय घटनाक्रम पर यक़ीन नहीं होता, लेकिन रिचर्ड मैकिने ने अपने इंटरव्यू में इस बदलाव की पूरी कहानी

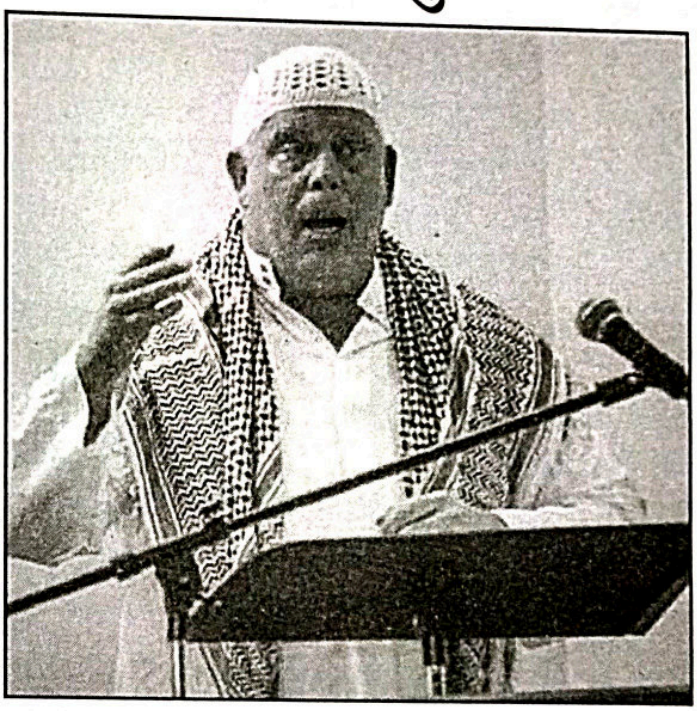

सुनायी । उन्होंने बताया, एक दिन मैं घर पर दूसरे समुदाय, उनके विश्वास और उनकी नस्ल के बारे में गंदी बातें बोल रहा था, तभी मेरी बेटी ने मुझे बहुत ही हिकारत भरी नज़रों से देखा ।

उसके बर्ताव ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया, जैसे एक प्रकाश का दीया जल गया हो । मैंने देखा कि मैं अपनी बेटी के साथ क्या कर रहा हूं, मैं अपने पूर्वाग्रहों को उसे सिखा रहा था । रिचर्ड मैकिने ने कहा कि न्यूज़ीलैंड में क्राइस्टचर्च में मस्जिद पर हुए आतंकी हमले के दोषी ब्रेंडन टैरेंट के भीतर उन्होंने पुराने रिचर्ड मैकिने को देखा ।

उन्होंने कहा कि जिसने ऐसा घृणित अपराध किया, जिसने कई मासूमों की जान ली, वह मैं ही था । हम एक ही तरह के लोग हैं, जब मस्जिद में लोगों ने उसका मुस्कुराकर स्वागत किया तो उसने रुक्कर सोचा नहीं, जबकि मैं इस्लामिक सेंटर में जब गया था तो मेरा अभिवादन एक मुस्कुराहट के साथ किया गया था, इसने मुझे थोड़ा बहुत पिघला दिया । इससे मैं पहले से ज़्यादा खुले दिमाग़ से सोचने में कामयाब हुआ और फिर मैंने दूसरों को सुनना शुरू कर दिया, लेकिन न्यूज़ीलैंड के हमलावर ने ऐसा नहीं किया ।

"ऐ नबी, हमने तुमको गवाही देने वाला, ख़ुशख़बरी देने वाला और सावधान कर देने वाला बनाकर भेजा है ताकि ऐ लोगो, तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसका (अर्थात् रसूल का) साथ दो, उसका आदर व सम्मान करो और सुबह और शाम अल्लाह की तस्बीह (गुणगान) करते रहो।"

(क़ुरआन, 48:8-9)

A Well Wisher

DARBHANGA

गर्मी में होने वाले रोगों से कैसे निबटें ?

■ डॉ॰ विभा खरे

मानव शरीर वातावरण में तापमान के उतार-चढ़ाव के बावजूद अपने तापमान को स्थिर रखता है । प्रकृति ने जहां अलग-अलग तापमान वाले मौसम बनाए हैं, वहीं मनुष्य को तापमान के इस उतार चढ़ाव को सहन करने की शक्ति भी प्रदान की है । एक सीमा तक मानव शरीर अपने आपको इन तापमान के परिवर्तनों के अनुसार ढाल सकता है । फिर भी कम तापमान तो सहन हो जाता है, मगर बहुत तेज़ गर्मी सहन नहीं हो पाती ।

गर्मी में ज़्यादा बीमारियां

हमारे शरीर में बहुत ही सुव्यवस्थित और नाज़ुक तापमान नियंत्रण शक्ति है । हमारे जैसे गर्म देश में गर्मी के मौसम में ही बीमारियां ज़्यादा होती हैं और कुछ तो केवल इस उष्णता के कारण ही पैदा होती हैं ।

शरीर की आंतरिक क्रिया से पैदा होने वाली उष्णता का 15 प्रतिशत हिस्सा शरीर के काम में आता है और बाक़ी 85 प्रतिशत सिर्फ़ तापमान बढ़ाने में ख़र्च होता है । जब शारीरिक श्रम किया जाता है, तो यह उष्णता और भी बढ़ जाती है और बढ़े हुए तापमान को कम करने के लिए पसीना आता है । हमारे देश में एक सक्षम व्यक्ति आराम के वक़्त 85 वॉट के बल्ब की गर्मी पैदा करता है जो कि 70 किलो कैलोरी होती है । यह मात्रा शारीरिक श्रम करने वालों में बढ़कर 400 से 525 कैलोरी प्रतिघंटा हो जाती है । जब यह ऊष्णता ठीक से संचालित न की जा सके और शरीर की तापमान नियंत्रण शक्ति जवाब दे जाए, तो ऐसे में उत्पन्न होने वाली व्याधि को लू लगना कहते हैं ।

दुनिया में जहां ज़्यादा गर्मी पड़ती है और लू भी चलती है, वहां इस व्याधि का प्रकोप अधिक है । अरब देश, कुछ अफ़्रीक़ी देश, दक्षिण अमेरिका व हमारे देश में राजस्थान, पंजाब के कुछ भाग, बिहार और उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में लू लगने की संभावना अधिक होती है । मई-जून के महीनों में गर्मी और सूखे वातावरण में जबकि तापमान 41 अंश सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है, लू ज़्यादा लगती है ।

सूखे वातावरण में ज़्यादा पसीना

गर्म और सूखे वातावरण में पसीना ज़्यादा निकलता है । पसीने के सूखने से गर्मी बाहर निकलती है और राहत मिलती है । मगर जब वातावरण गर्म और नम हो, तब पसीना तो आता है, मगर वह सूख नहीं पाता है और तापमान कम नहीं होता । इसलिए यह पसीना व्यर्थ जाता है । ऐसे में ज़्यादा पानी निकलने से शरीर में पानी की कमी हो सकती है और उसका संतुलन बिगड़ सकता है । इसके अलावा, अगर ऐसे समय में दूसरे कारणों से शरीर में पानी की कमी हो जाए, जैसे दस्त लगना, पेचिश या उल्टी होना, तब भी शरीर में पानी का संतुलन बिगड़ सकता है । इसे डीहाइड्रेशन कहते हैं । जब कभी दस्त लगते हैं या उल्टियां होती हैं, तो शरीर में नमक और पानी की कमी हो जाती है और ऐसे में लू के लक्षण भी जल्दी प्रकट होते हैं ।

खुजलाने से हो सकता है संक्रमण

गर्मी के दिनों में जब तेज़ धूप पड़ती है, तब आपने अक्सर देखा होगा कि शरीर पर, ख़ासतौर से उन भागों पर जो कि खुले हुए होते हैं, छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं, जिनको लोग घमौरी, अम्हौरी आदि नामों से जानते हैं । इनमें खुजली और जलन होती है । जिन लोगों को पसीना ज़्यादा आता है, यह तकलीफ़ भी ज़्यादा होती है । ज़्यादा खुजलाने से इनमें संक्रमण हो सकता है और फिर ये फोड़े-फुंसी का रूप धारण कर लेते हैं ।

बहुत-से लोग सोचते हैं गर्मी के मौसम में आम खाने से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है और इससे घमौरी ज़्यादा होती है । बहुत लोग यह भी सोचते हैं कि यह तकलीफ़ दवाई की गर्मी से ज़्यादा होती है । पर ये सब भ्रांतियां हैं । दरअस्ल यह सब गर्मी की देन है । इस मौसम में फोड़े-फुंसी ज़्यादा होते हैं, क्योंकि पसीना ज़्यादा आने के कारण चमड़ी पर स्थित कीटाणु ज़्यादा परेशानी पैदा कर सकते हैं ।

एलर्जी के कारण आती है छींक

गर्मी के दिनों में धूल-मिट्टी बहुत उड़ती है और जिन लोगों को इनसे एलर्जी हो, उनमें तकलीफ़ बढ़ जाती है ।

एलर्जी के कारण छींक आती है । नाक से पानी बहता है और नाक बंद हो जाती है । आंखों में भी खुजली होती है और पानी आता है ।

गर्मी से बचने के लिए अक्सर लोग वातानुकूलित जगहों में रहना पसन्द करते हैं और जब एकाएक ऐसी जगहों से तेज़ धूप में बाहर आते हैं, तो तापमान के अचानक बदलने से कुछ लोगों को एलर्जी की शिकायत हो जाती है, जिसे वे सर्दी-ज़ुकाम की संज्ञा देते हैं । आपने देखा होगा कि वातानुकूलित सिनेमा में जाकर और वहां से तेज़ धूप में दोपहर का शो देखकर बाहर निकलने पर बहुत-से लोगों को ऐसी शिकायत होती है ।

बहुत से व्यक्ति इस मौसम में ऑपरेशन कराना ठीक नहीं समझते । ऐसा समझा जाता है कि पसीना ज़्यादा होने की वजह से घाव ठीक से नहीं भरता और मवाद फैलने की आशंका ज़्यादा होती है । हालांकि यह महज़ ग़लतफ़हमी है फिर भी लोग सर्दियों में ऑपरेशन कराना ज़्यादा उचित समझते हैं ।

गर्मी में ज़्यादा श्रम हानिकारक

वैसे दूसरी बीमारियां जिनका मौसम से संबंध नहीं है बर्मी में भी हो सकती हैं । गर्मी के बाद बारिश का मौसम शुरू होता है और मौसम बदलने से हैज़ा, पेचिश, आंव, दस्त आदि बीमारियां अक्सर लोगों को परेशान करती हैं । इनके अलावा सर्दी-ज़ुकाम, फ्लू, निमोनिया आदि भी इसी वक़्त ज़्यादा होते हैं । पीलिया, मलेरिया, जोड़ों में दर्द और चमड़ी की कुछ शिकायतें इसी दौरान बढ़ जाती हैं । हैज़ा, दस्त, पेचिश आदि की शिकायत गंदगी से फैलती है । ऐसे समय खनिज ज़्यादा निकल जाने के कारण शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है और डीहाइड्रेशन हो जाता है ।

गर्मी में ढीले, सफ़ेद और ऐसे कपड़े पहनने चाहिए जिससे हवा का आवागमन ठीक रह सके, तंग और ऐसे कपड़े जिनमें हवा नहीं आ-जा सकती है, इस मौसम के लिए उपयुक्त नहीं है । उन्हें गर्मी में ज़्यादा श्रम नहीं करना चाहिए । अगर आवश्यक हो, तो श्रम के साथ-साथ बीच-बीच में छाया में आराम कर लेना चाहिए । इनसे शरीर में तापमान का संतुलन बना रहता है और शरीर को आराम के दौरान, स्वयं को व्यवस्थित करने का मौक़ा मिल जाता है ।

एहतियात के तौर पर गर्म प्रदेशों में काम करने वाले लोगों को बहुत पानी पीते रहना चाहिए । तपते सूर्य में ज़्यादा श्रम करने वालों को एक घंटे में क़रीब एक लीटर तक पानी पीना चाहिए । चूंकि पसीने में नमक भी निकलता है, तो ऐसा समझा जाता है कि पानी के साथ-नमक भी लेना चाहिए, परंतु हमारे देश में वैसे ही ज़्यादा नमक खाने की आदत है, इसलिए अगर ख़ाली ठंडा पानी ही पीया जाए, तो ठीक रहता है ।

बच्चों और वृद्धों में गर्मी सहन करने की शक्ति की कमी

कभी-कभी जब सारी सावधानियों के बावजूद लू लग ही जाए, तो रोगी को फ़ौरन किसी ठंडी जगह ले जाना चाहिए । तंग कपड़े उतार कर उसके शरीर को ठंडा करने की चेष्टा करनी चाहिए । ठंडे पानी से, बर्फ़ से और दूसरी तरह जैसे भी हो उसके तापमान को कम करने की कोशिश करनी चाहिए । ज़रूरत पड़ने पर बर्फ़ की सिल्ली पर भी व्यक्ति को लिटाया जा सकता है । ऐसे व्यक्ति को जल्दी अस्पताल ले जाना चाहिए, जहां उसको उपयुक्त उपचार मिल सके ।

शरीर में पानी की कमी कभी-कभी आपात स्थिति पैदा कर देती है । ख़ासतौर से बच्चों और वृद्धों में, जिनमें इसे सहन करने की शक्ति कम होती है, बहुत ध्यान से और तुरंत उपचार करना चाहिए ।

अस्पताल में उनका इलाज होना चाहिए और उनके शरीर में उचित मात्रा में दवाई पहुंचनी चाहिए जिससे कि कमी पूरी की जा सके । यह द्रव सुई द्वारा शिरा में दिया जा सकता है । साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना पड़ेगा कि शरीर से अधिक पानी न निकले । उल्टी, दस्त, हैज़ा अगर हो, तो उन्हें रोकने के उपाय करने चाहिए । जिन लोगों को धूल, मिट्टी आदि से एलर्जी हो उन्हें दोपहर के वक़्त धूप में बाहर नहीं निकलना चाहिए और अचानक ठंडी से गर्म जगह और गर्म से ठंडी जगह नहीं जाना चाहिए । ऐसा करने से वे अपनी एलर्जी को क़ाबू में रख सकते हैं ।

जिन लोगों को घमौरियां और फोड़े-फुंसी ज़्यादा होते हैं, उन्हें गर्मी से बचने के लिए दिन में दो या तीन बार ठंडे पानी से स्नान करना चाहिए और किसी भी अच्छे कीटाणु-नाशक पाउडर को बदन पर छिड़कना चाहिए । धूप में निकलें, तो बदन जितना ठंडा रहे उतना ही अच्छा रहता है । ढीले, शीतलता प्रदान करने वाले सूती कपड़े उपयुक्त रहते हैं ।

पर्दा : सर्वोत्तम सौंदर्य रक्षक

पर्दे के विरोध में जो तर्क सबसे ज़्यादा दिया जाता है वह यह कि पर्दा औरतों की ग़ुलामी का प्रतीक है । तो जनाब मैंने पूरा इतिहास खंगाल डाला, कहीं नहीं मिला कि ग़ुलामों को पर्दे में रखने का रिवाज रहा हो । हां यह ज़रूर मिला कि पुराने ज़माने में ग़ुलाम औरतें बाज़ार में बिकने के लिए सज-संवार कर खड़ी की जाती थीं ।

लोग आंखें फाड़-फाड़कर उनकी ख़ूबसूरती के दाम लगाते थे और दुकानदार उन औरतों को ख़रीदार को बेचकर अपने पैसे सीधे करता था । क्या आज के फैशन शो, मिस यूनिवर्स और मिस वर्ल्ड जैसे शो यही काम नहीं कर रहे हैं । तो फिर औरतों की ग़ुलामी के प्रतीक इस तरह के शो हुए न कि पर्दा ?

कुछ लोगों का यह भी कहना है कि बुर्क़े में दिखायी देना कम हो जाता है और औरतें दुर्घटना की शिकार हो जाती हैं । अगर ऐसा है तो पहले हेलमेट पर रोक लगनी चाहिए, क्योंकि हेलमेट के साथ भी यही कहानी है ।

किसी भी औरत के लिए ज़ाहिरी तौर पर सबसे क़ीमती चीज़ उसका हुस्न होता है । और वह अपने हुस्न को बरक़रार रखने के लिए तरह-तरह की तरकीबें करती हैं । तरह-तरह के केमिकल और हर्बल इस्तेमाल करती है । एक अनुमान के मुताबिक़ दुनिया में कास्मेटिक्स का कारोबार सात बिलियन डॉलर सालाना है, लेकिन ये केमिकल वक़्ती फ़ायदा देकर उसके चेहरा का क़ुदरती भोलापन और नर्मी छीन लेते हैं ।

इन कास्मेटिक्स के दाम इतने ऊंचे होते हैं कि ग़रीब घर की लड़कियां उनका इस्तेमाल सोच भी नहीं सकतीं । लेकिन पर्दा औरतों की ख़ूबसूरती का ऐसा रक्षक है जो आसानी से हर जगह उपलब्ध है, सस्ता है और इसका कोई साइड इफेक्ट नहीं । सूरज से आने वाली अल्ट्रावायलेट रेज स्किन की सबसे बड़ी दुश्मन होती हैं ।

ये स्किन की नमी सोख लेती हैं और उसे खुरदुरा बना देती हैं । स्किन में झुर्रियां पड़नी शुरू हो जाती हैं और इन्सान वक़्त से पहले बूढ़ा दिखायी देने लगता है । नर्म स्किन की ये रेज ख़ासतौर से दुश्मन होती हैं । अगर चमड़ी गोरी है तो ये रेज उसके मेलानिन से रिएक्शन कर चमड़ी का रंग गहरा कर देती हैं । ये रेज स्किन कैंसर की भी वजह होती हैं ।

लेकिन अगर इन्सान का जिस्म अच्छी तरह ढका हुआ है तो वह इन ख़तरनाक रेज से काफ़ी हद तक बचा रहता है । अरब जैसे इलाक़ों में जहां सूरज अपनी पूरी तपिश बिखेरता है वहां लोग इसीलिए अपने जिस्म को पूरी तरह ढक्कर चलते हैं । मर्दों की सख़्त स्किन तो कुछ हद तक इन किरणों को बर्दाश्त कर लेती है लेकिन औरतों की नर्म खाल तो इन्हें बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर पाती ।

गर्मियों में हल्के रंग का पर्दा और जाड़ों में गहरे रंग का पर्दा जिस्म का सर्दी और गर्मी से बचाव भी करता है । साथ ही अगर नाक ढकी हुई है तो हवा में मौजूद धूल, मिट्टी, धुवां और नुक़सानदायक बैक्टीरिया इन्सानी जिस्म से दूर रहते हैं और इन्सान सेहतमन्द रहता है । साथ ही स्किन की नमी भी बरक़रार रहती है ।

औरतों में सजने संवरने की ख़्वाहिश मर्दों से ज़्यादा होती है । और वे अपनी-अपनी हैसियत के अनुसार शृंगार करती हैं । लेकिन सोसाइटी में अमीर लड़कियों का सजना ग़रीब लड़कियों के लिए निराशा का सबब बन जाता है । पर्दे की प्रथा सबको एक रंग में रंग देती है और कोई दूसरे से ज़्यादा अमीर नहीं दिखायी देता । पर्दा कमसूरत औरत की बदसूरती को भी छुपाता है और उसे हीन भावना का शिकार नहीं होने देता ।

आज के दौर में पर्दे के उठते चलन ने तलाक़ के मामले बढ़ा दिये हैं, क्योंकि पहले पर्दे की वजह से मर्द परायी औरतों को देखने से बचा रहता था और उसे अपनी बीवी ही ख़ूबसूरत मालूम होती थी, लेकिन अब शादी से पहले ही मर्दों के सामने से बहुत-सी ख़ूबसूरत लड़कियां गुज़र चुकी होती हैं नतीजे में उसे अपनी बीवी पसन्द नहीं आती ।

हज़रत मुआज़ इब्ने
जबल (रज़ि॰) से रिवायत है
कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद
(सल्ल॰) ने कहा–"अल्लाह कहता है कि मेरे
लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि मैं उन लोगों से
मुहब्बत करूं जो मेरे लिए एक-दूसरे से मुहब्बत
करते हैं, मेरे लिए एक-दूसरे से मिलते हैं और मेरे
लिए एक-दूसरे पर ख़र्च करते हैं।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher
DARBHANGA

होना चाहिए ख़ुश

टोकूंगा तो टुच्चा कहोगे
ठीक है, ठीक है
आख़िर आप स्वतंत्र ही नहीं
स्वच्छन्द भी हैं ।
कहो, लिखो, बताओ
कब-कब किसके साथ
कहां-कहां कितनी रात ?
आप बुद्धिजीवी हैं
आप समाज के दर्पण हैं
ये आप क्या दिखा रहे हैं ?
ये आप क्या दिशा दे रहे हैं ?
आपकी ज़िम्मेदारी आपके दायित्व
भाड़ में जाने दो
आपको अधिकार है
आने वाले भटकें
तो कौन दोषी ?
अच्छा आप मात्र लेखक हैं
समाज सुधारक नहीं
ठीक वैसे ही
जैसे अश्लील नृत्य को
नायिका कहती है
कला-प्रदर्शन
फिर आप सीटियों से
हूटिंग से बौखलाती क्यों हैं ?
परदे का खलनायक भी
गालियां सुनकर प्रसन्न होता है
सीटियां, फब्तियां सुनकर
आइटम सांग करने वाली
नायिका भी ख़ुश है
फिर तो आपको भी
होना चाहिए ख़ुश ।

सड़क छाप

रास्ता नापते रहते हैं
मंज़िल की तलाश में
मंज़िल का नहीं पता
मिलेगी कैसे ?
फिर भी न जाने
किसकी कौन-सी है तलाश
किसकी कौन-सी है मंज़िल
लापता है गुमनाम है
लेकिन फिर भी है
सभी को तलाश
सभी ढूंढ़ रहे हैं
खोज रहे हैं
मंज़िल की तलाश में
मंज़िल-मंज़िल
सर कटी लाश की
पहचान कैसे हो ?
जिन्हें यह भी नहीं पता
क्या करना है ?
कैसे करना है ?
उन्हें क्या पता
उनकी मंज़िल है कहां ?
सो बस चल रहे हैं
रास्ते पर किन्तु
मंज़िल है नदारद ।
भाग रहे हैं इधर से उधर
चलते-चलते
हो गये हैं
सड़क-छाप ।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
छिन्दवाड़ा (म०प्र०)

"लोगों, अपने रब से डरो
जिसने तुमको एक जान से पैदा
किया और उसी जान से उसका
जोड़ा बनाया और उन दोनों से
बहुत मर्द और औरत दुनिया में
फैला दिए ।"

(क़ुरआन, 4:1)

A Well Wisher

DARBHANGA

शेर और किशमिश

एक ख़ूबसूरत गांव था । चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ । पहाड़ी के पीछे एक शेर रहता था । जब भी वह ऊंचाई पर चढ़कर गरजता था तो गांव वाले डर के मारे कांपने लगते थे ।

कड़ाके की ठंड का समय था । शेर ने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था । वह बहुत भूखा था । शिकार के लिए वह नीचे उतरा और गांव में घुस गया ।

वह शिकार की ताक में घूम रहा था । दूर से उसे एक झोपड़ी दिखायी दी । खिड़की में से टिमटिमाते दिये की रोशनी बाहर आ रही थी । शेर ने सोचा यहां कुछ न कुछ खाने को ज़रूर मिल जाएगा । वह खिड़की के नीचे बैठ गया ।

झोपड़ी के अंदर से बच्चे के रोने की आवाज़ आयी । ऊं...आं...ऊं...आं..। वह लगातार रोता जा रहा था । शेर इधर-उधर देखकर मकान में घुसने ही वाला था कि एक औरत की आवाज़ आयी–

'चुप रहो बेटा । देखो लोमड़ी आ रही है । बाप रे, कितनी बड़ी लोमड़ी है ? कितना बड़ा मुंह है इसका । कितना डर लगता है उसको देखकर ।' लेकिन बच्चे ने रोना बंद नहीं किया ।

मां ने फिर कहा–'वह देखो, भालू आ गया...भालू खिड़की के बाहर बैठा है । बंद करो रोना नहीं तो भालू अंदर आ जाएगा', लेकिन बच्चे का रोना जारी रहा । उसे डराने का कोई असर नहीं पड़ा ।

खिड़की के नीचे बैठा शेर सोच रहा था–'अजीब बच्चा है यह ! काश मैं उसे देख सकता । यह न तो लोमड़ी से डरता है, न भालू से ।'

उसे फिर ज़ोर की भूख सताने लगी । शेर खड़ा हो गया । बच्चा अभी भी रोए जा रहा था ।

'देखो...देखो...' मां की आवाज़ आयी, 'देखो शेर आ गया शेर । वह रहा खिड़की के नीचे ।' लेकिन बच्चे का रोना, फिर भी बंद नहीं हुआ । यह सुनकर शेर को बहुत ताज्जुब हुआ और बच्चे की बहादुरी से उसको डर लगने लगा । उसे चक्कर आने लगे और बेहोश-सा हो गया ।

'वह कैसे जान गयी कि मैं खिड़की के पास हूं ।' शेर ने सोचा । थोड़ी देर बाद उसकी जान में जान आयी और उसने खिड़की के अंदर झांका ।

बच्चा अभी भी रो रहा था । उसे शेर का नाम सुनकर भी डर नहीं लगा ।

शेर ने आज तक ऐसा कोई जीव नहीं देखा जो उससे न डरता हो । वह तो यही समझता था कि उसका नाम सुनकर दुनिया के सारे जीव डर के मारे कांपने लगते हैं, लेकिन इस विचित्र बच्चे ने मेरी भी कोई परवाह नहीं की । उसे किसी भी चीज़ का डर नहीं है । शेर का भी नहीं ।

अब शेर को चिंता होने लगी । तभी मां की फिर आवाज़ सुनाई दी । 'लो अब चुप रहो । यह देखो किशमिश...।'

बच्चे ने फ़ौरन रोना बंद कर दिया । बिल्कुल सन्नाटा छा गया ।

शेर ने सोचा–'यह किशमिश कौन है ?

'बहुत ख़ूंख़ार होगा ।' अब तो शेर भी किशमिश के बारे में सोचकर डरने लगा । उसी समय कोई भारी चीज़ धम्म से उसकी पीठ पर गिरी । शेर अपनी जान बचाकर वहां से भागा । उसने सोचा कि उसकी पीठ पर किशमिश ही कूदा होगा ।

अस्ल में उसकी पीठ पर एक चोर कूदा था, जो उस घर में गाय-भैंस चुराने आया था । अंधेरे में शेर को गाय समझकर वह छत पर से उसकी पीठ पर कूद गया । डरा तो चोर भी । उसकी तो जान ही निकल गयी जब उसे पता चला कि वह शेर की पीठ पर सवार है, गाय की पीठ पर नहीं ।

शेर बहुत तेज़ी से पहाड़ी की ओर दौड़ा, ताकि किशमिश नीचे गिर पड़े, लेकिन चोर ने भी कसकर शेर को पकड़ रखा था । वह जानता था कि यदि वह नीचे गिरा तो शेर उसे ज़िंदा नहीं छोड़ेगा । शेर को अपनी जान का डर था

और चोर को अपनी जान का ।

थोड़ी देर में सुबह का उजाला होने लगा । चोर को एक पेड़ की डाली दिखायी दी । उसने ज़ोर से डाली पकड़ी और तेज़ी से पेड़ के ऊपर चढ़कर छिप गया । शेर की पीठ से छुटकारा पाकर उसने चैन की सांस ली ।

शेर ने भी चैन की सांस ली–'भगवान को धन्यवाद मेरी जान बचाने के लिए । किशमिश तो सचमुच बहुत भयानक जीव है' और वह भूखा-प्यासा वापस पहाड़ी पर अपनी गुफ़ा में चला गया ।

सामान्य ज्ञान

- प्राणदायक वायु ऑक्सीजन की खोज जोसेफ प्रिस्टले ने की ।
- फूलों के अरेंजमेंट की जापानी आर्ट को इकेबाना कहा जाता है ।
- दुनिया की सबसे बड़ी नदी नील नदी है ।
- दुनिया के सबसे बड़े जलप्रपात नियाग्रा फॉल की खोज लुईस हेन्नेपिन ने की ।
- नोबेल पुरस्कार की शुरुआत 1895 में की गयी ।
- तिब्बत को सामान्यत: दुनिया की छत कहा जाता है ।
- पेरिस के एफिल टॉवर का निर्माण अलेक्जेंडर एफिल ने करवाया था ।
- मशहूर मोनालिसा की तस्वीर लियोनार्डो द विंसी द्वारा बनायी गयी ।
- ग्रीनलैंड दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है ।
- दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान सहारा है ।
- दुनिया का सबसे बड़ा महासागर प्रशांत महासागर है ।
- ऑस्ट्रेलिया की खोज जेम्स कुक ने की थी ।
- 15 अगस्त को भारत के साथ-साथ दक्षिण कोरिया भी अपना स्वाधीनता पर्व मनाता है ।
- न्यूयॉर्क शहर का निक नेम बिग एप्पल है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि०), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ० मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

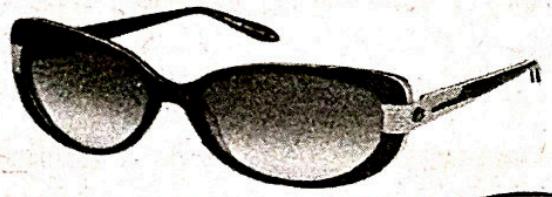


Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

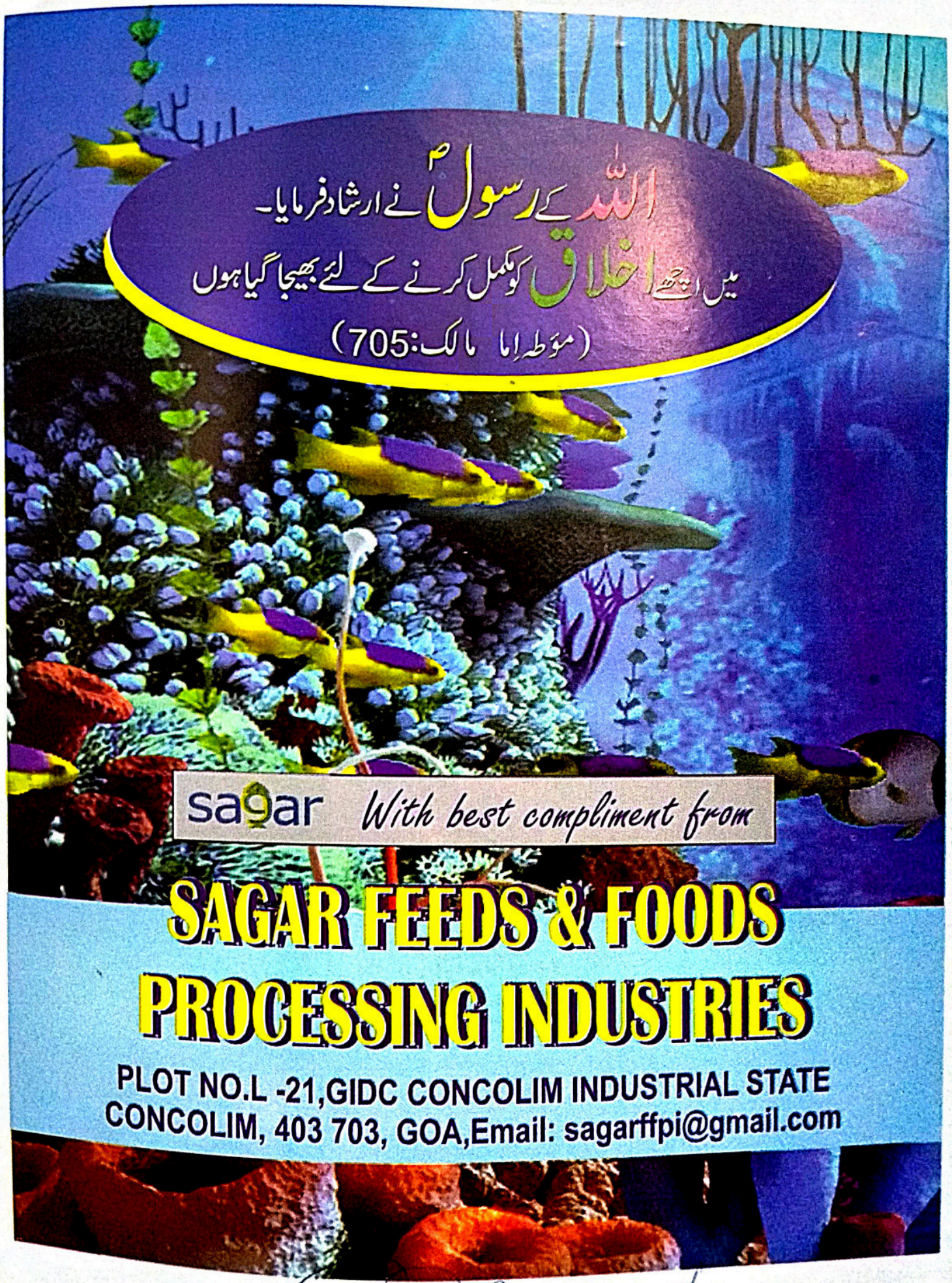
اللہ کے رسولؐ نے ارشاد فرمایا۔
میں اچھے اخلاق کو مکمل کرنے کے لئے بھیجا گیا ہوں
(مؤطہ اِما مالک:705)
sagar
With best compliment from
SAGAR FEEDS & FOODS
PROCESSING INDUSTRIES
PLOT NO.L -21,GIDC CONCOLIM INDUSTRIAL STATE
CONCOLIM, 403 703, GOA,Email: sagarffpi@gmail.com

Posted on 20-21 April 2019
May 2019
Posted Delhi RMS Delhi-110006
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.04.2019
Total pages 52 with Cover

कान्ति
NEW DELHI-110025

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

With Best Compliments From

HINDUSTAN GROUP
A various Industries Under One Name
Group

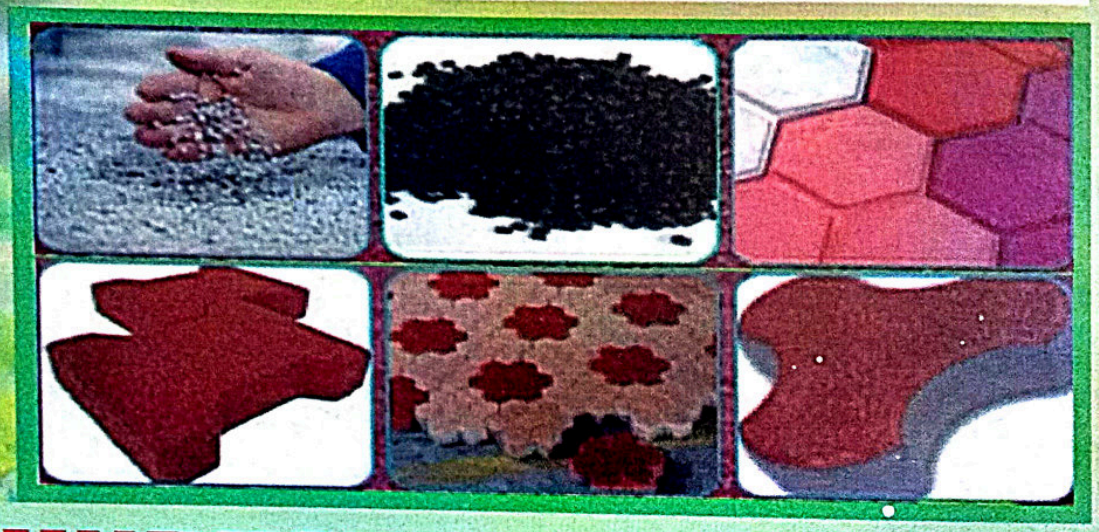

HINDUSTAN INDUSTRIES

MANUFACTURING UNIT FOR
PAVERS, TILES & BLOCKS

AT
Plot No. S-2, COLVALE INDUSTRIAL ASTATE
COLVALE, BARDEZ,GOA, INDIA
HEAD OFFICE
NH-17, Kraswada, Mapusa, Goa
Ph.: 22577900, 2257793, 2257700
www.hindustangroupgoa.com